CSIR in Media



News Bulletin

6th to 10th December 2019







CSIR-CDRI

10th December, 2019

परजावा स ।मला प्राटान ।दलाएगा जाड़ा क दद स छूटकारा

जागरण विशेष 🕨 रियूमेटाइड आर्थराइटिस के इलाज में मील का पत्थर साबित हो सकती है सीडीआरआइ की खोज

प्रोटीन से बनेगा जोड़ों का उपचार करने वाला इंजेक्शन जल्द ही होगा उपलब्ध

रूमा सिन्हा, लखनऊ

जोड़ों के दर्द से छुटकारा पाना अब पहले से कहीं आसान हो सकता है। केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान (सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट, सीडीआरआइ), लखनऊ के वैज्ञानिकों ने इस बीमारी (रियुमेटाइड आर्थराइटिस) का इलाज खोज निकालने का दावा किया है। लिवर (यकृत) में मौजूद हेलमिंथ नामक परजीवी में उन्हें ऐसा प्रोटीन मिला है, जो जोड़ों में मौजूद आर्टीकुलर कार्टिलेज की मरम्मत कर सकता है। जोड़ों के बीच कुशन या गदीनुमा यह संरचना ही जब धिस जाती है, तो समस्या उत्पन्न होती है।

एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर छह में से एक व्यक्ति आर्थराइटिस यानि जोड़ों के दर्द से पीड़ित है। आर्थराइटिस की समस्या पुरुषों की तुलना में महिलाओं में अधिक है। वृद्ध तो परेशान हैं ही, अब तो युवावस्था में भी यह बीमारी बड़ी आबादी को प्रभावित करते दिख रही है। समय रहते समृचित इलाज न



डॉ.नैवेद्य चट्टोपाध्याय ।

होने और दिनचर्या में सुधार न लाने पर दवाओं का कुछ खास असर नहीं होता। उधर, घूटने के ऑपरेशन और प्रत्यारोपण में भी मेडिकल साइंस पूरी तरह सफल नहीं दिख रहा है।

लाखों रुपये खर्च करने के बाद भी पीड़ित को पुरा समाधान प्राप्त हो जाएगा, यह गारंटी कोई नहीं देता।

ऐसे में दर्द को दबाने का एकमात्र साधन

है दर्दिनिरोधक दवाएं, किंतु इनके लगातार सेवन से किडनी और प्रतिरोधक क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे में सीडीआरआइ, लखनऊ के वैज्ञानिकों की खोज बड़ी साबित हो सकती है। सहज, सस्ता और सुरक्षित



डॉ. यासिर खान।

मिलेगी। सीडीआरआइ के एंडोक्राइनोलॉजी विभाग के डॉ. नैवेद्य चट्टोपाध्याय और डॉ. यासिर खान के इस शोध को फेडरेशन ऑफ अमेरिकन सोसाइटी फॉर एक्सपेरीमेंटल बायोलॉजी के प्रतिष्ठित जर्नल फेसेब ने प्रकाशित किया है। दुनिया इसे अहम मान

जागरण

डॉ. चड़ोपाध्याय और डॉ. खान ने दैनिक जागरण को बताया कि मिट्टी से सीधे प्राप्त की जाने वाली सब्जियां जैसे मुली, गाजर आदि के जरिये या साफ-सफाई के अभाव में अधिकतर लोगों में लिवर में बड़ी संख्या में यह परजीवी (लिवर फ्लूक) घर बना लेते उपचार मिलने पर करोड़ों लोगों को बड़ी यक हैं। भारत में यह बेहद आम है। चूँकि इंसानी



प्रतीकात्मक चित्र

लिवर में मौजूद परजीवी में ऐसा प्रोटीन मिला है, जो हड़िडयों और जोड़ों में मौजूद कुशन (आर्टीकुलर कार्टिलेज) को क्षतिग्रस्त होने से रोकेगा, साथ ही इनकी मरम्मत भी करेगा। आर्थराइटिस रोग में कार्टिलेज के क्षतिग्रस्त होने के कारण ही जोड़ों में सूजन व असहनीय दर्द की समस्या होती है। कार्टिलेज के समुचित उपचार से दर्द का कारण ही खत्म हो जाएगा। इस प्रोटीन से बनी दवा को इंजेक्शन के रूप में लिया जा सकेगा।

– डॉ. नैवेद्य चट्टोपाध्याय, सीडीआरआइ,

शरीर ऐसे परजीवियों से लगातार लड़ने की कोशिश करता है, जिससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता (इम्यून सिस्टम) प्रभावित होती है। प्रतिरोधक क्षमता का क्षरण होने के कारण लगभग सौ तरह की वीमारियां (ऑटो इम्यून डिजीज) होने की आशंका रहती है। इसमें से सबसे आम है रियुमेटाइड आर्थराइटिस है। बहरहाल, वैज्ञानिकों ने इस परजीवी में ही एक ऐसे प्रोटीन का होना पाया है, जो आर्टिकुलेट कुशन की मरम्मत करने में कारगर है।

डॉ. चट्टोपाध्याय बताते हैं कि आर्थराइटिस के उपचार के लिए एंटीवॉडी बेस्ड दवा का प्रयोग किया जाता है। दुनिया में कुछ ही कंपनियां ऐसी दवा बनाती हैं। यह बहुत महंगी

होने के साथ शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को भी प्रभावित करती है। वहीं, भारत में कैंसर के इलाज में काम आने वाली मेथोट्रेक्जेट दवा को स्टेरॉयड के साथ मरीजों को दिया जाता है, जो कि ठीक नहीं है। इसका बहुत दुष्प्रभाव होता है। यही वजह है कि यह शोध बेहद अहम माना जा रहा है। प्रोटीन से विकसित दवा से रोग का उपचार तो होगा, लेकिन किसी तरह का दुष्प्रभाव नहीं होगा। प्रतिरोधक क्षमता पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा। वहीं, यह इलाज काफी सस्ता और आसान भी होगा।

> जागरण विशेष की अन्य खबरें पढ़ें www.jagran.com/topics/ jagran-special

https://epaper.jagran.com/epaper/10-dec-2019-262-national-edition-national-page-11.html

Published in:

Dainik Jagran



CSIR-NBRI

9th December, 2019

आयोजन

दो दिवसीय गुलदाऊदी और कोलियस शो का समापन, विजेताओं को किया गया सम्मानित

'स तरह घर पहुंचते ही बच्चों को देखकर बाहर का तनाव दूर हो जाता है ठीक उसी तरह फूलों को देख सारा तनाव पीछे छूट जाता है। कुछ पाठक ने पुष्प प्रदर्शनी में व्यक्त किए।

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान

में आयोजित दो दिवसीय गुलदाऊदी और कोलियस शो (पुष्प प्रदर्शनी) का रविवार को शानदार समापन हुआ। सुबह दस बजे से शाम छह बजे तक चली प्रदर्शनी को देखने के लिए लोगों की जमकर भीड़ उमड़ी। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद विधि मंत्री ब्रजेश पाठक भी फूलों को देख गदगद नजर आए। मंत्री ने विजेताओं को सम्मानित करते हुए उनके प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर उन्होंने तिवारी मौजूद रहे।

प्रदर्शनी में मदन मोहन मालवीय मार्ग लिए सम्मानित किया गया।



एनबीआरआइ में आयोजित प्रदर्शनी के समापन पर विजयी प्रतिभागी ट्रॉफी के साथ 🌘 जागरण

की रंजीता अग्रवाल सात कप, शील्ड संस्थान द्वारा विकसित गुलदाऊदी की नई और द्राफियां जीतकर पहले स्थान बौनी किस्म एनबीआरआइ पुखराज को पर रहीं। वृंदावन लखनऊ की मंजू भी जारी किया। पीले पुष्पों वाली इस नई शंकर, लामार्टीनियर ब्वायज कॉलेज से किस्म का पुष्पन नवंबर से जनवरी के सत्यनाम, कैंट से गौरव जोशी, एचएएल मध्य होता है। यह गमलों, क्यारियों में फैजाबाद रोड दो दो कप, शील्ड, लगाने के लिए उपयुक्त है। इस अवसर दाफियों के साथ दूसरे स्थान पर रहे। पर संस्थान के निदेशक प्रो एसके बारिक इसके अलावा अचल ग्रींस एल्डिको, ने अगले वर्ष पुष्प प्रदर्शनी को हीरक लखनऊ विकास प्राधिकरण, मंजीत जयंती वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा भौर्या सेक्टर ए विजय नगर, उमा शंकर की। कार्यक्रम संयोजक डॉ. एसके साह गोमतीनगर, लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज व टाटा मोटर्स देवा रोड को भी रंजीता अग्रवाल को मिले 32 पुरस्कारः खुबसूरत फूलों की प्रदर्शनी लगाने के



प्रदर्शनी में बच्चे के साथ सेल्फी लेती महिला • जागरण

Published in:

Dainik Jagran



CSIR-NBRI

9th December, 2019

CSIR-NBRI unveils new variety of chrysanthemum at flower show

HT Correspondent

letters@httive.com

LUCKNOW: The CSIR-NBRI, Lucknow, unveiled a new dwarf variety of chrysanthemum (flowering plant) 'NBRI-Pukhraj' on the concluding day of the two-day annual chrysanthemum and coleus flower show organised here on Sunday.

"The newly developed variety has yellow flowers and blooms during late November to early January. It is also excellent as potted plant, for garden beds and landscaping," said PA Shirke, chief scientist, CSIR-NBRI, Lucknow.

The ubiquitous site of different varieties of flowers elated the visitors comprising every age group. Children enjoyed the flower show along with their parents.

The closing ceremony was organised at the open-air theatre of the institute, amidst vast array of Chrysanthemum and splendid varieties of Coleus scattering colour and joy in the atmosphere. UP minister Brajesh Pathak and chief guest at the show, distributed prizes to the winners.

On the occasion several competitions were also organise. This year Ranjeeta Agarwal of Madan Mohan Malviya Marg, Lucknow won seven trophies, running challenge cup and shield each while Manju Shanker of Vrindavan Yojna Lucknow, Sathyanam



'Pukhraj', the new variety of chrysanthemum flower.

of La Martiniere College, Lucknow and Major Gaura v Joshi of Cantt Lucknow won two trophies, running challenge cup and shields each, respectively.

Three hundred eighty prizes (130 first, 109 second and 141 commendation) were distributed to the winners. Ranjeeta Agrawal of Madan Mohan Malviya Marg occupied the first position by winning 32 prizes (17 first, 10 second and 5 commendation) followed by Sathyanam of La Martinier Boys College who secured 17 prizes (11 first, 5 second and 1 commendation). While Major Gaurav Joshi, HQ, Central Command, Lucknow with 23 prizes (10 first, 5 second and 8 commendation), stood at third position.

Addressing the valedictory

function, Brajesh Pathak said that little flowers were just like small children and it had been always cheerful and relaxing to spend time with them. He hoped that the upcoming flower shows would be more attractive and colorful. He congratulated all the winners and NBRI for successfully organising this show.

Earlier, while welcoming the guest, Prof SK Barik mentioned that the institute had been continuously organising this flower shows ince 1960.

He informed that next year would be the Diamond Jubilee year of the flower show and also announced starting of a new shield by NBRI as Diamond Jubilee Celebration of flower show from next year.

Published in:

Hindustan Times



NIIST technology forwaste water treatment

CSIR-NIIST

9th December, 2019

Effluents from rice mills, milk units can be treated

The National Institute for Interdisciplinary Science and Technology (CSIR-NIIST) has issued the patent licence for an eco-friendly technology for waste water treatment developed by it to a Kochi firm for commercialisation. Victoria Innovative Ltd., Kochi, has obtained the licence of the patent for a licence fee of ₹15 lakh, CSIR-NIIST officials said. CSIR-NIIST, at Pappanamcode here, had invented the 'Buoyant Filter Bioreactor (BFBR).'

It is a novel high-rate anaerobic reactor for treating complex waste water and patented it a few years ago (Patent No. 242196 titled 'A device for the biological treatment of waste water containing biodegradable solids'). According to the officials, the technology is suited for treating complex effluents generated by rice mills, ice cream plants, milk and milk product units, fish processing industries and similar units that flush out complex waste water.

"This is a totally eco-friendly biological method of treating waste water with minimum running cost," the officials said. A major research laboratory under the Council of Scientific Industrial Research (CSIR), NIIST undertakes research projects of both basic and applied nature in a number of key areas.

Published in:

The Hindu



8th December, 2019

Undersea unmanned ROVs will be developed by 2025: CSIR chief

Sulogna.Mehta
atimesgroup.com

Visakhapatnam: Visakhapatnam: Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) director general Shekhar C Mande visited National Institute of Oceanography (NIO) in the city on Saturday to interact with scientists and researchers.

"NIO has asked for funds to develop the ROVs and CSIR is reviewing the project cost. The unmanned ROVs, fitted with cameras and sensors, can take pictures and collect samples from hydrothermal areas in the Indian Ocean. These are areas of high tem-

perature, where new minerals can be found. This make-in-India initiative can function at a undersea depth of up to 5 kilometres. It is expected to be ready by 2025. At present, we will be developing the first prototype at NIO headquarters lab that can go up to a depth of 200 metres," Mande told TOI.

Mande also elaborated on CSIR's successful research on developing potash and cattle feed out of spent-wash, an effluent produced during conversion of molasses to ethanol. The Central Salt and Marine Chemicals Research Institute at Bhavnagar, which comes under CSIR, has successfully generated potash

out of spent wash.

"It will help reduce India's dependence on potash imports for fertilisers by 15-20% and can generate around 15,000 jobs. The organic effluent from spent wash can be used to produce cattle feed while the purified water can be used for irrigation. From one litre of alcohol, 8-15 litres of spent wash is generated, which cannot be discharged in water or soil owing to its highly polluting nature. CSIR has helped initiate a potash producing plant from spent wash at Walchandnagar, Solapur; and we are in the process of getting multiple international patents," said Mande.

Published in:

Times of India

CSIR-CSMCRI, NIO

8th December, 2019

Process developed to extract potash from spent wash'

It will result in saving of foreign exchange, says CSIR DG

SPECIAL CORRESPONDENT VISARHAPATNAM

The industrial waste management technologies, being developed by the Council of Scientific and Industrial Research (CSIR) - Central Salt and Marine Chemicals Research Institute (CSMCRI), will result in saving of crores of rupees in foreign exchange, Director General, CSIR, Shekar C Mande, has said.

The CSIR Director General was on a visit to the CSIR-NIO Regional Centre in the city on Saturday.

"The spent wash management technology developed by CSIR-CSMCRI will enable alcohol distilleries to recover valuable byproducts from their effluents. The sugarcane (molasses)-based alcohol distilleries generate eight to 15 litres of spent wash to produce a single litre of ethanol. The spent wash is a highly polluting liquid residual waste, which poses serious environmental hazards," the DG told media persons, who met him on the occasion.

"CSIR-CSMCRI in Bhavnagar, Gujarat, has developed the process to extract potash from the liquid effluent (spent wash). The potash can be used as a fertilizer. This will result in foreign ex-



The good work done by CSIR has won the appreciation of Prime Minister Narendra Modi, says Director General of CSIR Shekar C. Mande

change savings to the tune of ₹500 to ₹700 crore a year through reduced dependence on fertilizer imports," Mr. Shekar Mande said.

'Job creation'

Apart from the saving in precious foreign exchange, the new technology was estimated to generate 15,000 jobs through indigenous fertilizer production. The treated organics could be used in cattle feed and the recycled water, safely in irrigation, without the danger of contamination of groundwater.

Successful trials were conducted in the past in Ahmedabad and in September, 2019, a medium-size plant was set up at Walchandnagar near Solapur, Maharashtra, at a cost of ₹30 crore. CSIR has obtained an international patent for the innovation. India, the second largest producer of sugarcane in the world, after Brazil, has 5 million hectares under sugarcane cultivation and produces 353 million tonnes of cane.

He said the good work done by CSIR has won the appreciation of Prime Minister Narendra Modi.

Big data

The Director General said that the CSIR-National Institute of Oceanography (NIO) has gathered valuable data on ocean studies in areas like temperature changes, salinity, pressure and micro nutrients, for the past 55 years. He felt that the data should be revisited and an integrated research was needed. An advisory committee would be formed soon to go into these aspects.

Earlier, the Mr. Shekar Mande interacted with research scholars and project staff at the regional centre.

NIO Director Sunil Kumar Singh and NIO Regional Centre Scientist-in-Charge G. Prabhakar S Murty were present.

Published in: The Hindu



8th December, 2019

කුදුම් නංස කිසින් සිනිවේ

సీఎస్ఐఆర్లో బిజయవంతమైన ప్రయోగం

- జన్కు వైబిధ్యం మన వాళ్లలో
 చాలా ఎక్కువ
- అందుకే అరుదైన
 జెనెటిక్ డిజూర్డర్స్ వస్తున్నాయి
- ದೆಕ್ ಸಿಕಿ ಇಂಧನ ಭದ್ರತ
 'ಬಯೌ ಫ್ರ್ಯಾಯಲ್ ಇನ್ನುಂಬಿ
- అల్జీమర్స్ కు కుంకుమ పుష్పు నుంచి మందు తయారు చేశాం
- బిన్న బిమానాల మీద
 పలిశోధనలు చేస్తున్నాం
- ిసాక్షి' ఇంటర్వూలో సిఎస్ఐఆర్ డేజ్ శేఖర్ మాండే

(మల్లు విశ్వనాథరెడ్డి, సాక్షి ప్రతినిధి, అమరావతి): కౌన్సిల్ ఆఫ్ సైంటిఫిక్ అండ్ ఇండ్కస్టియల్ రీసెర్స్ (సీఎస్ఐఆర్) ఆధ్వర్యంలో 38 పరిశోధన నంస్థలు ఉన్నాయి. వాటిలో 4,500 మంది శాస్త్రవేత్తలు వివిధ రంగాల్లో పరిశోధనలు చేస్తున్నారు. దేశం ఎదుర్కొం టున్న అనేక నవాళ్లు. నమస్యలకు పరిష్కారాలు కనుగొనడానికి సీఎస్ఐఆర్ పనిచేస్తోంది. పర్యావ రణం మొదలు ఆరోగ్యం వరకు.. పలు రంగాల్లో ఆవనరమైన పరిశోధన ఫలితాలను దేశానికి అందిం రడానికి నిరంతరం పనిచేస్తున్నామని సీఎస్ఐఆర్ డైరె కైర్ జనరల్ శేఖర్ మాండే చెప్పారు. 'పద్మావతి వెంక టేశ్వర పాండేషన్' నిర్వహించిన కార్యక్రమంలో పాల్గొనడానికి విజయవాడకు వచ్చిన ఆయన 'సాక్షి'కి ప్రత్యేకంగా ఇంటర్వ్యూ ఇచ్చారు. ముఖ్యాంశాలివీ..

మందులు, టీకాలు కనిపెట్టడానికి జన్ఫు శ్రేణి

మన దేశ ప్రజల్లో ఉన్న వైవిధ్యం ప్రవందంలో మరె క్కడా లేదు. జినోమ్ సీక్వెస్స్ (జన్ను తేణి) కూడా మన వాళలో ఉన్నంత విభిన్నంగా మరిక్కడా ఉండదు. అందువల్లే మనదీశంలో అరుచైన జీనెటిక్ డిజార్గర్స్ (జన్యు సంబంధిత సమస్యలు) ఎక్కువ. వీటిని అధిగమించడానికి 1008 మంది జన్యు శ్రేణు లను రూపొందించాం. మందులు, టీకాలు కనిపెట దానికి ఈ నమాదారం ఉపయోగపడుతుంది. మాన పుల జన్నూ బ్యూపింట్ను డీకోడ్ చేయడానికి జన్ను త్రేణ్ పనికొన్నంది. ఇన్స్టేట్యూట్ ఆఫ్ జినోమిక్స్ සයයි සයන් ලින්ධ සයණ පස් (කස්කඩ්), බයහර් ఫర్ సెల్యులర్ అండ్ మాలిక్యులర్ బయాలజీ (సీసీ ఎంట్) సంయుక్తంగా జన్యుత్రేణి రూపకల్పన ప్రాణి కును చేపట్నాయి. అలాగే డెంటల్ ఇంప్రాంట్స్ట్ సు చౌకగా తయారుచేసే పరిజ్ఞానాన్ని దూపాందించాం. దీనిపల్ల ఇప్పుడున్న ధరల్లో మూడో వంతుకీ ఇంప్లాంట్స్ లభించనున్నాయి.

స్పెంట్ వాష్ట్రమ శుద్ధి చేస్తే...

మద్యం తయారీ ప్లాంట్ల (డిస్టిలరీస్)లో వ్యర్థ జలా లను "స్పెంట్ వాష్" అంటారు. దీన్ని శుద్ధి చేసే సాంకేతిక పరిజ్ఞానం ఇప్పటివరకు లేదు. ఒక లీటరు మద్యం తయారు చేస్తే 10–15 లీటర్ల వ్యర్థజలం

(స్వాంట్ వాష్) వస్తుంది. మొలాసిస్ నుంచి మద్యం తయారుచేసే కర్మాగారాలు దేశంలో 300కు సైగా ఉన్నాయి. ఇవి ఏటా 250 కోట్ల లీటర్ల స్పెంట్ వాష్ను ఉత్పత్తి చేస్తున్నాయని అంచనా. ఇవి స్పెంట్ వాష్, మిగతా వ్యర్థ జలాలను శుద్ధి చేయకుండా బయటకు వదులుతున్నాయి. ఫలితంగా తీవ్ర దుర్గంధం వెలువడటంతోపాటు పరిసర ప్రాంతాలు కాలుష్య కాసారాలుగా మారిపోతున్నాయి. భూగర్స జలాలు కూడా కలుషితమవుతున్నాయి. స్పింట్ వాష్ట్ కాలుష్యానికి కారణం. పొటాష్, దీన్ని వేరు చేస్తే మిగలా వ్యర్థాలను తొలగించడం చాలా మలువు. పాటాష్ట్రమ వేరు చేసే సాంకేతిక పరిజా నాన్ని సెంటల్ సాల్ అండ్ మెరెన్ కెమికల్స్ రిసెర్స్ ఇన్స్టేట్యూట్ (సీఎస్ఎంసీఆర్ఐ) అభివృద్ధి చేసింది. పొటాష్ను మనం దిగుమతి చేసుకుంటున్నాం. స్కెంట్ వాషను శుద్రి చేస్తే.. రూ.700 కోట్ల విలువైన పాటాష్ట్రమ ఉత్పత్తి చేయొచ్చు. శుద్ధి ప్రత్తియలో శుద్ధ

'మేకిన్ ఇండియా'కు సహకారం

మీకిన్ ఇండియా కార్వకమానికి సీఎస్ఐ

ఆర్ తన వంతు నహకారమందిస్తోంది.

వివిధ రంగాల్లో చేస్తున్న పరిశోధన

ఫలితాలను పరీక్షించడానికి

ఇటీవల భారత్ హెచ్

ఎల్మక్రికల్స్ బిమిటిడ్

తబుల్)తో ఒప్పందం

కొత్త సాంకేతిక పరిజా

ఆందించడానికి ఇది

దోహదం చేస్తుంది.

కుడుద్చుకున్నాం.

నాన్ని వేగంగా

(బీహెచ్

19 66

విమానం

దేశానికి ఇంధన భద్రతను అందించే శక్తి బయో ఫ్యూయల్కు ఉంది. కామగ నుంచే ఇప్పటివరకు బయోఫ్యాయల్ తయారు దేస్తున్నారు. ఇతర ప్రత్యామ్నాయ వనరుల నుంచి కూడా తయారు చేయొచ్చు. సీఎస్ఐఆర్ రూపాల దించిన బయో ఫ్యాయల్తో డెప్రోడూన్ నుంచి దీని ప్ర ఢిల్లీకి విమానం నడిపాం, వాణిజ్యవరంగా బయో ప్రభుత్వ ఫ్యూయల్ను ఉత్పత్తి చేసే అవకాశాలను వరిశీలిన్ను దేస్తే ప్ర

క్స్ తో కలిసి తేలికపొటి విమానాల తయారీ మీద పరిశోధనలు చేస్తున్నాం. 19 సీట్ల 'సరస్' విమానం సిద్ధమైంది. దీన్ని పరీక్షిస్తున్నాం. 70 సీట్ల విమానం డిజైన్ అమోదం పొందింది. ఈ పరిశోధనలు పూర్తయితే.. దేశంలో చిన్న విమానా శ్రయాలకు కూడా విమానాలు తిరిగే అవకాశం ఉంటుంది. 'విజిబిలిటీ' తక్కువగా ఉన్నప్పుడు విమానాలు దిగడం (ల్యాండింగ్) 'పెద్ద సమస్య. దీన్ని అధిగమించడానికి హైలెవల్ సెన్సార్స్ ఉన్న 'దృష్టి'ని రూపొందించాం. ద్రస్తుతం 50 'దృష్టి' వ్యవస్థలను దీశంలోని వివిధ విమానాశ్రయాల్లో వాడుతున్నారు. ఈ టెక్నాలజీని రెండు డ్రైవేటు కంపెనీలకు ఇచ్చాం. ఆస్టైలియా, యూరప్ దేశా లకు కూడా ఇవ్వబోతున్నాం.

హిందుస్తాన్ ఏరోనాటిక్స్, నేషనల్ ఏరోనాటి

జలం కూడా వస్తుంది. ఆ సీటిని డిస్టిలరీస్ వాడుకోవ చ్చు. అయితే.. స్పెంట్ వాష్ శుద్ధి ప్లాంట్ ఏర్పాటు మరీ చౌక కాడు. 2.5 ఏళ్లలో పాటాష్ ఉత్పత్తి ద్వారా పెట్టబడి వచ్చేస్తుంది. తర్వాత నుంచి లాభమే.

వ్యర్థాల లీయూజ్కు పలశోధనలు

వ్యవసాయ వ్యర్థాలను తగలబెట్టడం వల్ల తీవ్ర కాలువ్య సమస్యలు వస్తున్నాయి. వ్యర్థాలను తిరిగి ఉపయోగించదానికి అనువైన పరిజ్ఞానాన్ని ప్రజలకు అందిందే దిశగా పరిశోధనలు దేస్తున్నాం. రైతులు ఆ వ్యర్థాలను సులువుగా 'రీయూజ్' చేసే పరిజ్ఞానాన్ని వచ్చే సీజన్కు సీఎస్ఐఆర్ అందిస్తుంది.

అబ్దీమర్స్ వ్యాధికి మందు

అల్టీమర్స్ వ్యాదికి కుంకుమ పువ్వు నుంచి మందు తయారు చేశాం. క్లినికర్ ట్రయల్స్ట్రకు అనుమతి కోసం ప్రభుత్వానికి విజ్ఞప్తి చేశాం.

> న్నాం. ఇలా చేస్తే.. ఇంధన దిగుమ తుల భారం తగ్గతుంది. ప్లాస్టిక్ నుంచి డీజిల్ తయారీ ప్రయోగం కూడా విజ యవంతమైంది. ఇటు ప్లాస్టిక్ నమ వ్యమ, అటు ఇంధన కొరతను అధిగ మించడానికి ఈ విధానం ఉపయోగప దుతుంది. వివిధ రాష్ట్ర ప్రభుత్వాలు

దీని పట్ల ఆసక్తి చూపిస్తున్నాయి. ఆంధ్రభవేశ్ ద్రభుత్వం కూడా ఇలాంటి యూనిట్లు ఏర్పాటు దేస్తే ప్లాస్టిక్ సమస్యను అధిగమించవచ్చు.

Published in:

Sakshi

8th December, 2019

ಮುಲಾಸಿಸಿತ್ ಕುಏಯಾಗಾಲೆನ್ನಿ..

- స్పెంట్ వాష్తో ఎరువు తయారీ
- సీఎస్ఐఆర్ డైరెక్టర్ జనర్లల్
 శేఖర్ సి.మాండే

మహారాణిపేట(విశాఖ దక్షిణం):

చేరకు నుంచి వచ్చే వ్యర్ధాల్లో ఒకటైన మొలాసి స్త్ ఎన్నో ఉపయోగాలు ఉన్నాయని కౌన్సిల్ ఆఫ్ సైం టిఫిక్ అండ్ ఇండస్ట్రియల్ రీసెర్స్(సీఎస్ఐఆర్) డైరెక్టర్ట్ జనరల్ డాక్టర్ శేఖర్ సి.మాండే తెల్లి పారు. శనివారం పెదవాల్తేరు నే**ష్ట్రక్లల్ ఇ**ట్ స్టిట్యూట్ ఆఫ్ ఓషనోగ్రఫీని సందర్భించారు. అనం

తరం ఆయన చిలేకరులతో మాట్లాడుతూ చెరకుతో పంచదార ఉత్పత్తి అనంతరం వచ్చే మొలాసిస్తతో ఆల స్రహాల్ తయారు చేశాక 'స్పెంట్ వాష్' అనే వ్యర్థం వెలువడుతుందన్నారు. ఇది ఎంతో ప్రమాదకరమైన దన్నారు. కాలుష్య నియంత్రణ మండలి నిబంధనల ప్రకారం దీనిని ఎక్కడా బయట పారబోయడానికి వీల్లే దన్నారు. లీటరు ఇథనాల్ తయారీతో 8 నుంచి 15 లీటర్ల స్పెంట్ వాష్ వస్తుందన్నారు. దీని నుంచి పంట అకు ఎరువుగా ఉపయోగ పడే పొటాషను తయారు చేసే సాంకేతిక పరిజ్ఞానాన్ని తాము అభివృద్ధి చేశామ న్నారు. దీని కోసం అహ్మదాబాద్ భావనగర్లలో ప్రయోగా గాత్మకంగా చేపట్టిన ప్లాంటు విజయవంతంగా నడు

స్తాందన్నారు. స్పెంట్ వాష్ శుద్దీకరణతో వెలువడే విలువైన పాటాష్త్రో పాటు ఆర్గానిక్ వ్యర్థా అన్లు శ్రశ్లుత్ర్మత్రలకు దాణాగా ఉపయో తింకశనమనాయి

> త్రిటా మూడు మిలియన్ ట్రస్నుల పాటాష్సు విదేశాల నుంచి ద్రిగుమతి చేసుకుంటు న్నామని, మొలాసిస్ త్ర్వర్గాలతో పాటాష్

ట్లటా రూ.500 కోటు

త్రంతోందు చేస్తే ఏటా తూ.500 నుంచి రూ.700 కోట్లు ఆతా అవుతుందని శేఖర్ సి.మాండే

వివరించారు. పొటాష్ను సొంతంగా తయారు చేస్తే విదేశీ మారక ద్రవ్యాన్ని కూడా ఆదా చేయడానికి వీలు కలుగుతుందన్నారు. దేశంలో 467కు పైగా మొలాసిస్ యూనిట్లు ఉన్నాయని, వాటి వ్యర్థా లతో పొటాష్ తయారు చేసే యూనిట్లు నెలకొల్పితే దేశంలో 15 వేల మందికి పైగా ఉపాధి లభిస్తుందని చెప్పారు.

ఈ యూనిట్ ఏర్పాటుకు రూ.30 కోట్ల వ్యయం అవుతుందని అంచనా వేశామన్నారు. ఎన్ఐవో ఏర్పాటై దాదాపు 55 ఏక్లు దాటిందని. దీనికి సంబంధించి తమ వద్ద సమాచారం ఉందని, దానిని విశ్లేషించడానికి ప్రయత్నాలు చేస్తున్నామని ఆయన వివరించారు. తుపాను రాక, వాటి ప్రభావం, రుతు పవనాల జాడ,

ఎన్ఐపో ఆధ్మర్యంలో పలశోధనలు

అంతర్మాతీయ ద్రమాణాలకు ఆనుగుణంగా ఎన్ ఐవో పరిశోధనలు జరుగుతున్నాయని శేఖర్ సి.మాండే వివరించారు. ఓషనోగ్రఫీపీ కొన్నేళ్లుగా ఎన్స్ పరిశోధనలు చేశామని, వాటికి జాతీయ. అంతరాతీయ సాయిలో ఆవారులు వద్చాయని గుర్తు చేశారు. ఈ పరిశోధనలో గొప్పగాప్ప విష యాలు వెలుగు చూశాయన్నారు. రుషికొండ వద నిర్మించనున్న ఓషనోగ్రఫీ భవనం మరో ఏడాది లోగా పూర్తి చేస్తామని, సాంకేతిక పరమైన కార ణాల వల్ల ఈ భవనం మధ్యలో నిలిచిపోయింద న్నారు. సముద్రంలో లోతుగా ఏమెనా కనుగొ నడానికి అవసరమేస ఒక వాహనం తయారు చేశామన్నారు. తొలుత 200 మీటర్ల లోతు వెళ్లడా నికి ఒక వాహనం తయారు చేయగా. తాజాగా 5 కిలోమీటరు లోతు వెళడానికి వీలుగా సొంతంగా ఒక వాహనం తయారు చేశామని మండే వివరిం చారు. ఈ సమావేశంలో శాస్త్రవేత్త సునీల్కుమార్. సీఎస్ఐఆర్ నేషనల్ ఇన్సీట్యూట్ ఆఫ్ ఓషనోగ్రఫీ రీజనల్ సెంటర్ చీఫ్ సెంటిసు అండ్ సెంటిసు ఇన్చార్లి జి.ప్రభాకర ఎస్.మూర్తి పాల్గొన్నారు.

వాటి తీవ్రత వంటివి ఇంకా కచ్చితంగా, సమగ్రంగా అంచనా వేయగలుగుతామన్నారు. ఉష్ణోగ్రతల పెరుగు దలకు కూడా కారణాలు తెలుస్తాయన్నారు.

Published in:

Sakshi



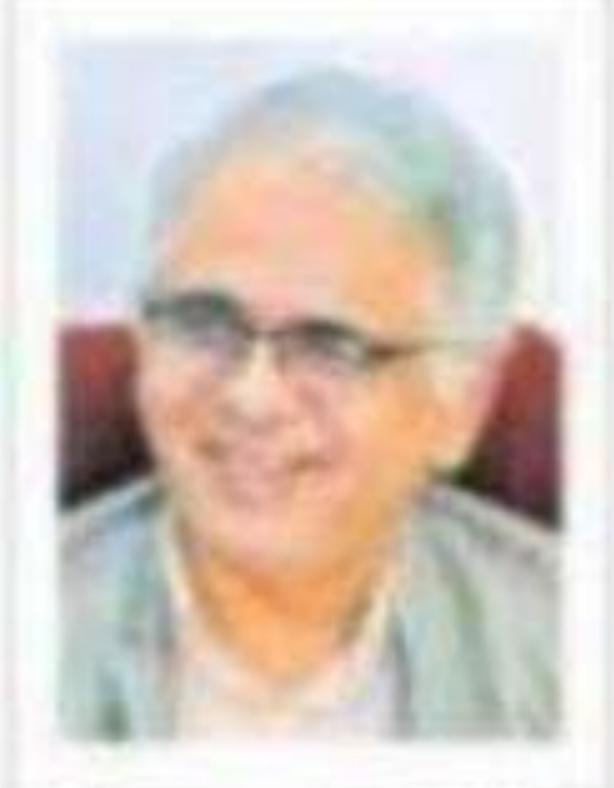
8th December, 2019

సర్ములర్ ఎకానమీకి ప్రాధాన్యం

🕪 జుగ్ డేటా అనలిటిక్స్ తో తుఫాన్లపై మలింత కచ్చితత్వం

🕪 'ఆంధ్రజ్యోతి'తో సీఎస్ఐఆర్ డైరెక్టర్ జనరల్ మాండే

విశాఖపట్నం, డిసెంబరు 7(ఆంధ్రజ్యోతి): దేశంలో సర్క్యు లర్ ఎకానమీకి ప్రాధాన్యం పెరుగుతోందని, వ్యర్థాల నుంచి విలువైన ఉత్పత్తులు తయారుచేసే పరిశోధనలు జరుగుతు న్నాయని కౌన్సిల్ ఆఫ్ సైంటిఫిక్ అండ్ ఇండస్ట్రియల్ రీసెర్స్ డైరెక్టర్ జనరల్ శేఖర్ సి.మాండే తెలిపారు. విశాఖపట్నంలోని నేషనల్ ఇనిస్టిట్యూట్ ఆఫ్ ఓషనోగ్రఫీ(ఎన్ఐఓ)ని శనివారం



సందర్శించిన ఆయన 'ఆంద్రజ్యోతి'తో మాట్లాడారు. ఓషనోగ్రఫ్ ఏర్పాటై 55ఏళ్లు దాటిందని, ఇప్పుడు తమవద్ద పెద్దమొత్తంలో సమాచారం ఉందని, దానిని విశ్లేషిం చడానికి బ్రయత్నాలు చేస్తున్నామని వివరించారు. తుఫాన్ల రాక, వాటి బ్రభావం, రుతుపవనాల జాడలను ఇంకా కచ్చితంగా అంచనా వేయగలుగుతామన్నారు. ఉప్పోగ్రతల పెరుగుదలకు కూడా కారణాలు తెలుస్తాయన్నారు. అంతర్మాతీయ బ్రమాణాలకు అనుగుణంగా ఎన్ఐఓలో పరిశోధనలు జరుగుతున్నాయన్నారు. యువతరం సవాళ్లను డైర్యంగా స్వీకరించాలని, వైఫల్యాలను వేడుకగా చేసుకోవా లని పిలుపునిచ్చారు. చంద్రయాన్-2లో ఇస్రోకు దేశం యావత్తు అండగా నిలిచిం దని గుర్తు చేశారు. వైఫల్యాల నుంచే విజయాలు వస్తాయని, పరిశోధనలకు, కొత్త సవాళ్ల స్వీకరణకు యువత ముందుకు రావాలన్నారు. చెరకుతో పంచదార ఉత్పత్తి చేసిన తరువాత మొలాసిస్ వస్తుందని, దానినుంచి ఆల్కహాల్ తయారీలో స్పెంట్-వాష్' అనే వ్యర్థం వెలువడుతుందన్నారు. ఇది చాలా బ్రమాదకరమని చెప్పారు. కాలుష్య నియంత్రణ మండలి నిబంధనల బ్రకా రం దానిని బయట ఎక్కడా పారబోయకూడదన్నారు. స్పెంట్-వాష్ నుంచి పంటపోలాలకు ఉపయోగ పడే పొటాష్ను తయారుచేసే సాంకేతిక పరిజ్వానాన్ని అభివృద్ధి చేశామన్నారు.

Published in:

Andhara Jyothi



Mushroom cultivation trg imparted

CSIR-NEIST



Twenty-five women from different self-help groups participated in a training programme on 'Cultivation of mushroom and production of vermicompost technology' at the CSIR-NEIST branch here on 7 December. During the programme, NEIST Branch TO, Dr BC Baruah, made a PowerPoint presentation on 'Mushroom cultivation towards sustainable socioeconomic development and to combat malnutrition' and 'Vermiculture and vermicompost production technology towards sustainable socioeconomic development'. The trainees were apprised of simple scientific techniques for commercial cultivation of oyster

8th December, 2019

mushroom, preparation of its spawn, and culture management. A practical demonstration on preparing mushroom bags was also presented.

Published in:
Arunachal Times

CSIR-CSIO

8th December, 2019

Innovation award for CSIO scientist

TRIBUNE NEWS SERVICE

Dr Neelesh Kumar, Senior Principal Scientist, Biomedical Instrumentation Unit of Central Scientific Instruments Organisation, has received an award for the 'Best Applied Research or Technology Innovation aimed at Improving the Life of Persons with Disabilities.

The award was presented to him by the Vice-President, M Venkaiah Naidu, for the development of



Vice-President M Venkaiah honours Dr Neelesh Kumar

'virtual intelligent techniques for rehabilitation'. The virtual reality-based instrumented and biofeed-

back system helps in quantifying the rehabilitation of patients, which in turn helps caregivers and the doctors.

The Biomedical Instrumentation Unit is working for the development of prosthetic, orthotics, and assistive technology.

Other scientists of the CSIO have received this award in 2012, 2014 and 2018. The CSIO has developed several technologies for improving the quality of life of persons with disabilities.

Published in:

The Tribune

एनबीआरआइ में दो दिवसीय गुलदाऊदी एवं कोलियस शो शुरू, आज दिए जाएंगे पुरस्कार

फुलों के बीच कांटे की टक्कर

🗷 र तक निगाह में हैं गुल खिले हुए... देऔर उनके बीच बेताब से चेहरे जो गुलों की खूबसूरती को जेहन और कैमरें में कैद करने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे थे। राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआइ) में दो दिवसीय गुलदाऊदी-कोलियस शो की शुरुआत शनिवार को हुई। संस्थान का सेंट्रल लॉन चटक शोख रंगों के फुलों से भर गया। आलम यह कि जहां तक नजर जाती फूल ही फूल नजर आते। अपनी खूबसूरती पर इठलाते इन फूलों के बीच खिताब के लिए कांटे की टक्कर दिखी। दिसंबर माह में गुनगुनी धूप और फूलों का साथ मानों हर किसी को आकर्षित कर रहा था। तमाम लोग पुष्प प्रदर्शनी कर भी निहाल थे।

बारिक ने किया। उन्होंने कहा कि सिंगल फूल वाली गुलदाऊदी, स्पाइंडर शामिल किया जाएगा। आयोजन करता आ रहा है। हर साल पौधे के लिए प्रतियोगिता हुई।



शनिवार को एनबीआरआइ में लगी गुलदाऊदी एवं कोलियस प्रदर्शनी में आनंद लेते युवा 🌘 जागरण

व उद्यान प्रभारी डॉ.एसके तिवारी ने स्थान की कमी के चलते अपना शौक में कैद करते दिखे।

देखने पहुंचने लगे। खास बात यह कि बताया कि प्रदर्शनी में 112 प्रदर्शकों पूरा नहीं कर पा रहे हैं तो वर्टिकल केवल लोग फुलों के साथ ही उनसे ने 1072 प्रविष्टियों को प्रदर्शित किया गार्डेन एक अच्छा विकल्प साबित हो बने कलात्मक उत्पाद जैसे माला, पुष्प गया है। प्रदर्शनी के आयोजन का मुख्य सकता है। 93 बटालियन सी आपीएफ, संयोजन, व आकर्षक गमलों को देख 🗷 उद्देश्य पुष्प कृषि उद्योग एवं इसके आशियाना के वर्टिकल गार्डेन को लोगों विभिन्न पहलुओं के प्रति जनसाधारण द्वारा खूब पसंद किया गया। डॉ. तिवारी 112 लोगों की 1072 प्रविष्टियां: में जागरूकता उत्पन्न करना है। प्रदर्शनी ने कहा कि गुलदाऊदी के वर्टिकल एनबीआरआइ के निदेशक प्रो.एसके में छोटे फूल वाली गुलदाऊदी, बड़े गार्डेन के अगले वर्ष से नई कैटेगेरी में **मानों सितारे उतर आए हों**: गुलदाऊदी

संस्थान बीते पांच दशकों से इसका गुलदाऊदी के साथ सर्वोत्तम कोलियस संस्की का रहा जोर: शोख चटक फूलों उनसे खूबसूरत विन्यास तैयार किए के साथ हर कोई सेल्फी लेने के लिए गए। गमले में तारे के रूप में खिले फूल प्रदर्शनी देखने वालों की संख्या में वृद्धि आकर्षण का केंद्र रहा वर्टिकल गार्डनः आतुर दिखा। क्या छोटा क्या बड़ा सभी सभी को आकर्षित कर रहे थे। किसी हो रही है। संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक यदि आप फूल पौधों के शौकीन हैं और फूलों के साथ अपनी तस्वीर को कैमरे ने छत्र तो किसी ने कोन के रूप में

यह रहे विजेता

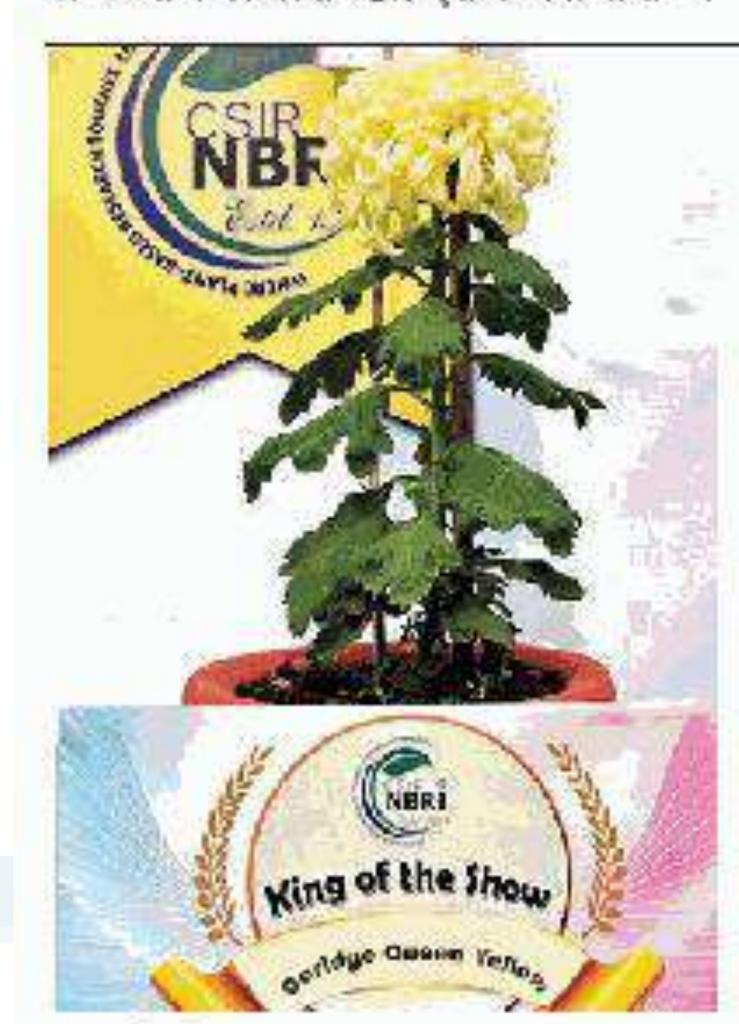
प्रदर्शनी का राजाः यह खिताब सिंगल बड़े फूल वाली पीले रंग की गुलदाऊदी के लिए विजय नगर की मंजीत मौर्या को मिला। प्रदर्शनी की रानी:छोटे फूल वाली गुलदाऊदी के एक नमूनेदार गमले के लिए लामार्टिनियर ब्वायज कालेज के सत्यनाम को मिला। प्रदर्शनी का प्रिस: पीच रंग की स्पाइडर गुलदाऊदी ने प्रिंस का खिताब अपने नाम किया। फ्लावर ऑफ द ईयर : गोमती नगर के उमा शंकर साह के पुष्प किक् बिओरी को फ्लावर ऑफ द झ्यर का पुरस्कार दिया गया। प्रदर्शनी का सर्वोत्तम कोलियस: यह खिताब लामार्टिनियर बायज कालेज ने जीता।

सभी विजेताओं को रविवार को शाम चार बजे होने वाले समापन समारोह में विधि एवं कानून मंत्री ब्रजेश पाठक द्वारा सम्मानित किया जाएगा।

पौधों की खरीदारी भी खूब हुई

एनबीआरआइ में बरगद के पेड़ के करीब

लगे विभिन्न स्टालों पर आकर्षक पॉट में बेचे जा रहे पौधों की भी खूब खरीदारी हुई। फेंड्स रोजरी के जुबिन अग्रवाल ने बताया कि लोग पिट्रनिया, गुलदाऊदी के साथ-साथ सकुलेंट व कैक्ट्स के पौधे भी खुब पसंद कर रहे हैं।



प्रदर्शनी में चुना गया किंग ऑफ द झ्यर

एचएएल के गुलदाऊदी व कोलियस को प्रथम पुरस्कार

एचएएल के गुलदाऊदी के रंग-बिरंगे माउंट को फूलों की क्वालिटी और आकार व रंगों के लिए प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया। कोलियस पौद्यों के माउंट को भी प्रथम पुरस्कार मिला।



बेटी बचाओं– बेटी पढ़ाओं की थीम पर सजा गुलदस्ता 🏿 जागरण

जानिए गुलदाऊदी की किरमों को

आज प्रदर्शनी दस बजे से

दो दिवसीय पुष्प प्रदर्शनी रविवार को

के पौधों को मनचाहा आकार देकर

सुबह दस बजे से शुरू होकर शाम

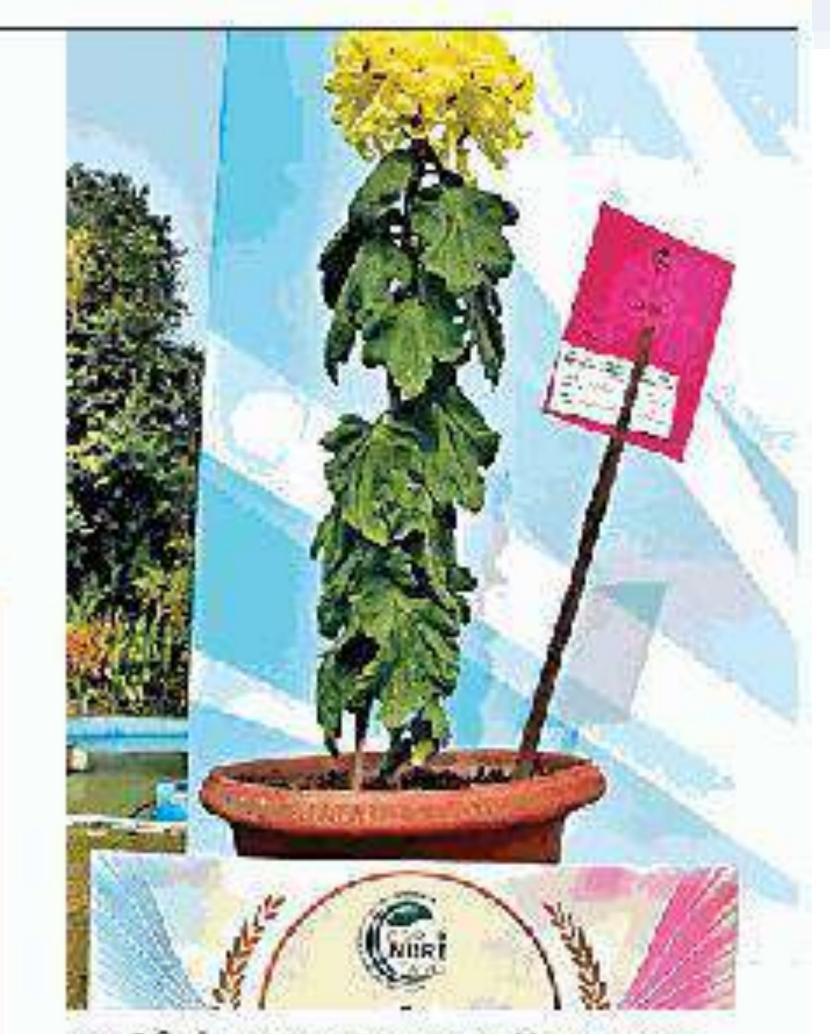
छह बजे तक चलेगी।

छोटे फूल वाली किस्में

केल्विन विक्ट्री (सफेद्र), अप्सरा (पिक्र), श्यामल (गहरा लाल), बीरबल साहनी (सफेद), कुंदन (पीला), लिलीपुट, पोटोमैक, कांस्या।

बड़े फूल वाली किस्में

स्रो बॉल (सफेद), कोसा ग्रांडी (सफेद), नैंसी (पीला), मांटीनियर (पीला), सोनार बंगला, एल्फेड विल्सन (लाल), आरेंज लेडी (नारंगी), डिगनिटी (लाल),ड्रीम केसेल, पिंक क्लाउड, कुइल्ड ग्रीन संसंशन, रोनॉल्ड।



प्रदर्शनी में चुना गया फ्लावर ऑफ द इयर

Published in:

Dainik Jagran

Produced by Unit for Science Dissemination, CSIR, Anusandhan Bhawan, 2 Rafi Marg, New Delhi



Mizoram farmers learn about aromatic crops

CSIR-IHBT 7th December, 2019

A group of farmers from the Mizoram Rural and Agriculture Development Society, Zotlang, Aizwal, visited the CSIR-IHBT, Palampur, to learn about aromatic crops, which are widely cultivated around the world for their high-value essential oils, use in perfumery, food, flavouring, pharmaceutical and agrochemical industry. The group was exposed to the potential aromatic crops and improved agro-technologies developed by the institute. Later, the CSIR-IHBT signed an MoU with the society for the promotion of aromatic crops such as chamomile, damask rose, rosemary, mushkbala, wild marigold, lemongrass and citronella.

Mizoram is one of the fastest growing economies in the country with a per capita income of Rs 50,021. Despite the fact that agriculture is the mainstay of about 60 per cent of the population of the state, a lack of irrigation facilities and value addition to agriculture are major deterrents. Longley district is also deprived of irrigation facilities and most of the agricultural fields are rain-fed. The cultivation of high-value aromatic crops offers a viable solution as the water requirement for these crops is low. The seeds of chamomile crop were provided to farmers along with a complete package of agro technologies. Dr Sanjay Kumar, director, CSIR-IHBT, Palampur, said the institute had started the aroma mission programme throughout the country to promote aromatic crops and bring additional area of 5,500 hectares under their cultivation to generate employment.

The processing unit is indispensable for value addition of aromatic plants and the establishment of this facility will benefit the farmers of Lungley district. This year, the institute has signed agreements with 20 farmer societies and installed processing units in different regions of the country.

Published in:

The Tribune



CSIR-CBRI

7th December, 2019

Curiosity Creates Endless Possibilities For Success In Science: Dr Atul

Students Learn To Have The Courage To Question



Roorkee: Central Building Research Institute, Roorkee scientists visited Government Primary School, Khanjarpur, Roorkee on December 06, 2019, under Jigyasa: Student-Scientist Connect Programme.

Interacting with the students, Dr. Atul Kumar Agarwal, Senior Principal Scientist & Jigyasa Programme Coordinator, CSIR-CBRI, Roorkee presented a lecture on "Flying High with Science and Jigyasa" and explained to them the importance of science in life. He told the students that science is tory answer, do not lose

everywhere and in everything and one only needs to find the right question to uncover its secrets. Why is the sky blue? Why does the sun rise in the east? How do birds fly? Why does water have no shape? Why is the water wet? All these questions may seem silly but hold deep knowledge of various scientific principles. He motivated the students to ask question about anything that awakens their curiosity. If their teacher, parents or elders are unable to provide a satisfac-

hope - find an expert and consult the books. Do not give up until the answer is found. This search will expand their intellectual limit and knowledgebase. If scientific curiosity is fuelled with appropriate courage and perseverance, then there is no end to the possibilities of success in science and life. Dr. Agarwal also discussed the students' dreams and aspirations and guided them.

India is celebrating 150 years of the Mahatma by following the principles of Mahatma

Gandhi throughout the year. Dr. Agarwal asked the students to work towards building a Swachh Bharat, Water Conservation and Plantation of Trees. Dr. Atul Agarwal along with the teachers and students planted a plant at the school premises and spread the message of living in harmony with nature. About 65 students of Government Primary School, Khanjarpur, Roorkee along with their Principal Smt. Harsh Lata Sharma and teacher Smt. Simmi Tyagi were present during the occasion.



Published in:

The Hawk



CSIR-CBRI

7th December, 2019

नन्त-मुत्र ।पद्याथिया का किया जागरूक

विज्ञान के गगन में करो विचरण-भर के विज्ञासा की उड़ान: डॉ अतुल

उत्तर भारत लाइव ब्यूरो

uttarbharatlive.com

रुड़की। केंद्रीय भवन अन्संधान संस्थान रुड़की के वैज्ञानिकों ने जिज्ञासाः विद्यार्थी-वैज्ञानिक संयोजन कार्यक्रम के अन्तर्गत राजकीय प्राथमिक विद्यालय खंजरप्र के नन्हें-मुन्ने विद्यार्थियों को जागरुक किया। सीबीआरआई के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और जिज्ञासा कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अत्ल अग्रवाल ने विद्यार्थियों को ''जिज्ञासा समझाया।



नीला क्यों है? सूरज पूर्व से ही क्यों उनके मन में किसी भी विषय को विद्यार्थियों के साथ विद्यालय की वैज्ञानित उड़ान'' विषय पर निकलता है? पंछी केसे उड़ते है? लेकर जिज्ञासा उत्पन्न होती है तो विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए उन्हें पानी का कोई आकार क्यों नही है? शिक्षकों, माता-पिता या किसी बड़े से प्रकृति के साथ सानिध्य से रहने का जीवन में विज्ञान का महत्व पानी क्यों गीला है? ये सभी प्रश्न प्रश्न करें। उत्तर न मिलने पर प्रयत्न संदेश दिया। कार्यक्रम में राजकीय सुनने में बचकाने लगते है पर इनके करें। विषय-विशेषज्ञ और किताबों प्राथमिक विद्यालय खंजरपुर के उन्होंने विद्यार्थियों को कहा की पीछे गहरा विज्ञान काम करता है। को ढूंढें जब तक उत्तर न मिले हार लगभग 65 विद्यार्थी अपने विज्ञान ही सब कार्यों का कारक है। उन्होंनें बच्चों को प्रेरित करते हुए ना माने। इस तरह प्रश्नों के उत्तर की प्रधानाचार्य हर्षलता शर्मा तथा उसकों समझाने के लिए केवल प्रश्न कहा कि कि वो किसी भी प्रश्न को खोज करते हुए उनकी ज्ञान की सीमा शिक्षिका सिम्मी त्यागी के साथ करने की आवश्यकता है। आसमान छोटा या हास्यप्रद न समझे, यदि का विस्तार होगा। जिज्ञासा के पंखों मौजूद रहे।

को साहस और दुढ़ता का सहारा मिलोगा तो विज्ञान के अनंत आसमान में विवरण कर विद्यार्थी नयी उच्चाईयां प्राप्त करेंगे। उन्होनें के सपनों और महत्वकांक्षीओं पर चर्चा की ओर उनका मार्गदर्शन किया। भारत वर्ष 2019 को महात्मा गांधी के 150वीं वर्षगांठ के अवसर पर पूर्ण वर्ष उनके सिद्धान्तों का पालन करने का प्रण हो रहा है।

ऐसे में डॉ. अतुल अग्रवाल ने विद्यार्थियों को एक स्वच्छ भारत के निर्माण जल संरक्षण और वृक्षारोपण का संकल्प दिलाया। डॉ. अत्ल अग्रवाल ने शिक्षिकाओं और

Published in:

Uttar Bharat Live



CSIR-IHBT

7th December, 2019



सीएसआईआर का मिजोरम ग्रामीण और कृषि विकास सोसाईटी के साथ समझौता ज्ञापन

BY भीना कॉंडल - 07 दिसम्बर, 2019

कांगड़ा/पालमपुर: उत्तर पूर्व हिमालयी क्षेत्र के मिज़ोरम खल एंड एग्रीकल्चरल डेवलपमेंट सोसाइटी, ज़ौटलंग, ऐज़वाल, मिज़ोरम के किसान समूह ने पिछले कल सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर का दौरा किया। उन्हें संस्थान में उपलब्ध सभी सुगंधित फसलों की जानकारी प्रदान की गई व इनके महत्व के बारे में बताया गया। इन फसलों की विश्व भर में व्यापक रूप से खेती की जा रही है, इन फसलों से प्राप्त सगंधित तल का उपयोग इत्र उद्योग, भोजन, फार्मास्युटिकल और एग्रोकेमिकल उद्योग में किया जाता है। उन्हें संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न बेहतर कृषि वितान प्रोद्योगिकियों के बारे में अवगत कराया गया। मिज़ौरम भारत का उत्तरपूर्वी राज्य है, जिसकी अर्थव्यवस्था अन्य राज्यों की तुलना में तेजी से बढ़ रही है, तथा प्रति व्यक्ति आय 50,021 रुपये है। अपनी अर्थव्यवस्था को अधिक बढ़ावा देने के लिए वे सुगंधित फसलें उगा सकते हैं और इन फसलों को उगाकर उच्च राजस्व अजिंत कर सकते हैं।

तदौप्रांत सीएसआईआर-आईएचबीटी ने इस सीसाइटी के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया जिसमें मुख्य उदेश्य जिला लुंगले, मिज़ौरम में उच्च मूल्य की सुगंधित फसलों की खेती, संवर्धन और आसवन इकाई की स्थापना करना है। किसान समूह के अध्यक्ष श्री ज़िओन ने कहा प्रसंस्करण इकाई को लुंगले में स्थापित किया जाना है, जो उत्तर-पूर्व भारत के दिक्षण-मध्य भाग में स्थित है, लुंगले जिले की औसतन ऊंचाई 722 मीटर है तथा लुंगले जिले के स्थानीय निवासी कृषि पर निर्भर हैं और फसलों को उगाकर अपनी आजीविका कमाते हैं। इस तथ्य के बावजूद कि राज्य की लगभग 60% आबादी के लिए कृषि मुख्य आधार है, कमशः 5% और 11% क्षेत्र खेती और सिंचाई के अधीन है। यह क्षेत्र सिंचाई सुविधाओं से वंचित है और अधिकांश कृषि क्षेत्र वर्षा पर निर्भर हैं तथा यह क्षेत्र उच्च मूल्य वाली सुगंधित फसलों की खेती के लिए उपयुक्त है क्योंकि इन फसलों के लिए अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती है। मिज़ोरम रूरल एंड एग्रीकल्चर डेवलपमेंट सौसाइटी सिंबोपोगोन प्रजातियों की खेती और प्रसंस्करण में समिलित है और सुगंधित फसल के क्षेत्र में बेहतर काम कर रही है।

ड़ा संजय कुमार, निदेशक, सीएसआईआर-आईएचबीटी, पालमपुर ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि सीएसआईआर ने सुगंधित फसलों को बढ़ावा देने लिए अरोमा मिशन कार्यक्रम शुरू किया है तथा इन फसलों के अंतर्गत 5500 हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र का लाने का फैसला किया है। जिससे कृषक समुदाय और ग्रामीण जनता का सामाजिक-आर्थिक उत्थान होगा और रोजगार सृजन में मदद मिलेगी। सुगंधित पौधों के मूल्य संवर्धन के लिए प्रसंस्करण इकाई अपरिहार्य है और इस सुविधा की स्थापना से लुंगले जिले के स्थानीय किसानों को लाभ होगा। उन्होंने कहा कि 2019 के दौरान, संस्थान ने प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना के लिए किसानों के समूहों के साथ 20 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं और देश के विभिन्न क्षेत्रों में इसे स्थापित किया है। उच्च मूल्य की सुगंधित फसलों की खेती से लुंगले क्षेत्र के किसानों को लाभान्वित किया जा सकता है।

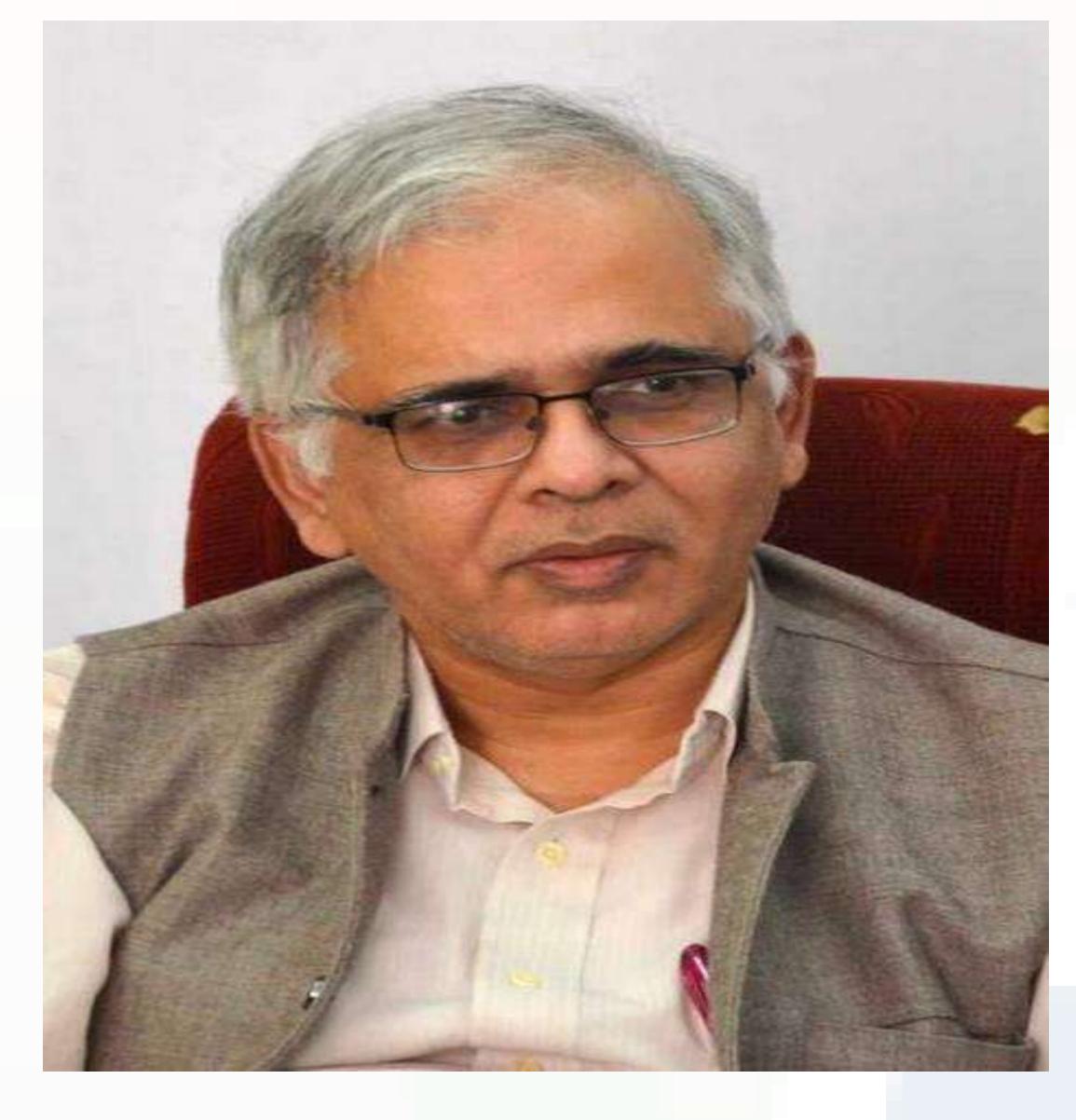
Published in:

Heem Shimla LIve



CSIR-CSMCRI comes out with a solution to deal with distillery effluent

CSIR-CSMCRI



Research Institute (CSMCRI), will result in Mande said. saving of crores of rupees in foreign exchange, Director General, CSIR, Shekar C 'Job creation' Mande, has said. The CSIR Director General Apart from the saving in precious foreign from their effluents.

7th December, 2019

The sugarcane (molasses)-based alcohol distilleries generate eight to 15 litres of spent wash to produce a single litre of ethanol. The spent wash is a highly polluting liquid residual waste, which poses serious environmental hazards," the DG told media persons, who met him on the occasion. "CSIR-CSMCRI in Bhavnagar, Gujarat, has Process developed to extract potash from developed the process to extract potash from spent wash, says CSIR Director General the liquid effluent (spent wash). The potash The industrial waste management can be used as a fertilizer. This will result in technologies, being developed by the Council foreign exchange savings to the tune of ₹500 of Scientific and Industrial Research (CSIR) to ₹700 crore a year through reduced - Central Salt and Marine Chemicals dependence on fertilizer imports," Mr. Shekar

was on a visit to the CSIR-NIO Regional exchange, the new technology was estimated Centre in the city on Saturday. "The spent to generate 15,000 jobs through indigenous wash management technology developed by fertilizer production. The treated organics CSIR-CSMCRI will enable alcohol could be used in cattle feed and the recycled distilleries to recover valuable byproducts water, safely in irrigation, without the danger of contamination of groundwater.



Successful trials were conducted in the past in Ahmedabad and in September, 2019, a medium-size plant was set up at Walchandnagar near Solapur, Maharashtra, at a cost of ₹30 crore. CSIR has obtained an international patent for the innovation. India, the second largest producer of sugarcane in the world, after Brazil, has 5 million hectares under sugarcane cultivation and produces 353 million tonnes of cane. He said the good work done by CSIR has won the appreciation of Prime Minister Narendra Modi.

Big data

The Director General said that the CSIR-National Institute of Oceanography (NIO) has gathered valuable data on ocean studies in areas like temperature changes, salinity, pressure and micro nutrients, for the past 55 years. He felt that the data should be revisited and an integrated research was needed. An advisory committee would be formed soon to go into these aspects.

Earlier, the Mr. Shekar Mande interacted with research scholars and project staff at the regional centre.

NIO Director Sunil Kumar Singh and NIO Regional Centre Scientist-in-Charge G. Prabhakar S Murty were present.

Published in:

The Hindu



RUCO Express launched in Dehradun

CSIR-IIP 7th December, 2019

The Indian Institute of Petroleum (IIP) in Dehradun has set up a plant where biofuel will be made from used edible oil. As part of this initiative, Repurpose Used Cooking Oil (RUCO) express was launched on Friday.

It is a joint initiative of Council of Scientific and Industrial Research-Indian Institute of Petroleum (CSIR-IIP), Food and Drug Administration (FDA), Food Safety and Standards Authority of India (FSSAI) and Gati Foundation. Uttarakhand secretary of FDA, Pankaj Pandey said that without proper knowledge of recycling, used cooking oil is bound to have a negative impact on public health and environment.

He said that if cooking oil is used more than three times, it can lead to serious diseases like cancer too. Pandey stressed on developing the supply chain for used cooking oil in Uttarakhand as well as other industries.

Director of CSIR-IIP, Anjan Ray, informed how Used Cooking Oil (UCO) is important for use as bio-fuel. He explained the benefits of used cooking oil as a potential source of renewable energy fuel. Ray said that it will lower the clean-up by reducing the emission which will further protect the environment and enhance health benefits.

Published in:

The Pioneer



CSIR-NBRI

7th December, 2019

देवासारभाई म गैंदालास्टरा देत कोलियस प्रदर्शनी आज से

ट्स बार का वीकेंड खास होने वाला रहै। शोख चटक फूलों के साथ आप परिवार सहित पिकनिक मना सकते हैं। जी हां, शनिवार से राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआइ) में दो दिवसीय वार्षिक गुलदाऊदी एवं कोलियस शो की शुरुआत होगी। फुलों में गुलदाऊदी पुष्प प्रेमियों की पहली पसंद है। जाड़े के मौसम में खिलने वाला गुलदाऊदी रंगों, आकार व प्रकार के लिए पसंद किया जाता है। खास बात यह है कि इसके फुल खिलने के बाद करीब एक माह तक गार्डन की शोभा बढ़ाते रहते हैं।

एनबीआरआइ के उद्यान प्रभारी

समय

शनिवार: दो से शाम

साढ़े पाच बजे।

डॉ. एसके तिवारी बताते हैं कि संस्थान द्वारा शो का आयोजन बीते पांच दशकों से किया जा रहा है। लोगों किया जाता है। कोशिश यह शाम छह बजे।



एनबीआरआइ में पलावर शो की चल रही तैयारी 🏿 जागरण

होती है कि प्रदर्शनी में आने वालों को प्लॉट को भी देखने का मौका मिलेगा। लगाए जाते हैं। देखा जाए तो लोगों हर तरह की जानकारी यहां से मिल सके। वानि जिस तरह देखिए गुलशन फूलों को यहां पिकनिक के लिए पूरा पैकेज एनबीआरआइ पुष्पकृषि के क्षेत्र में किए से भरा दिखाई देगा। यही नहीं संस्थान उपलब्ध होता है।

जा रहे अनुसंधान को साझा द्वारा आयोजित किए जाने वाले कौशल करने के साथ यहां विकसित विकास कार्यक्रमों की जानकारी भी किस्मों का प्रदर्शन करता है। दी जाती है। यहां लगाए जाने वाले इस बार यहां आने वालों स्टॉलों में बीज, पौधे, गार्डीनंग में प्रयोग द्वारा इस शो को बहुत पसंद रिवेवार: सुबह दस से को प्रदर्शनी के अलावा किए जाने वाले उपकरण की भी बिक्री गुलदाऊदी कं जरवेशन की जाती है। इसके अलावा फूड स्टॉल

Published in:

Dainik Jagran

CSIR-IIP

7th December, 2019

Biodiesel from used cooking oil: First RUCO express flagged off

HT Correspondent

letters@hindustantimes.com

from used cooking oil at a plant installed at the Indian Institute of Petroleum, Dehradun. In this regard, the first Repurpose Used Cooking Oil (RUCO) Express was flagged off for the plant installed at IIP here on Friday.

Pankaj Pandey, food safety commissioner, Anjan Ray, director Indian Institute of Petroleum and Anoop Nautiyal, founder chairperson Gati Foundation jointly flagged off the RUCO Express with 300 liters of used cooking oil, the statement issued by Gati Foundation said.

Commissioner food safety Pankaj Pandey said every time edible oil is used, the more dangerous it becomes for health and it also poses a risk to serious diseases like cancer, heart problems, acidity etc.

He appealed to hotels, restaurants and other food business operators not to use cooking oil more than three times and after using it for three times, the remaining oil should be given for biodiesel production at IIP.

"Setting up of plant to make biodiesel from used cooking oil in IIP Dehradun is a big achievement and also said that street food vendors should also be incorporated in this project", he said.



First Repurpose Used Cooking Oil (RUCO) Express was flagged off for a plant installed at the Indian Institute of Petroleum in Dehradun on Friday.

Director of Indian Institute of Petroleum, Anjan Ray said biodiesel, as well as jet fuel, can be made from used cooking oil.

He said that IIP intends to set up a plant to make bio-diesel from used cooking oil used in at least 10 percent of the country's villages.

"From this, on one hand, people can be saved from harmful edible oil and on the other hand, biodiesel imports in the country can also be reduced. IIP will buy

used cooking oil at ₹20 per liter," Ray said.

"Biodiesel will be made from 90 percent of such used cooking oil which means 100 liters of used cooking oil will make about 90 liters of bio-diesel," he said.

Neeraj Atrey, principal Scientist at IIP, also demonstrated the process of making bio-diesel from used cooking oil at the event. He said a plant for making biodiesel from used cooking oil up to 50 liters can be planted in a

truck. Businessmen can use this plant in turn and make bio-diesel out of their used cooking oil.

Anoop Nautiyal, Founder of Gati Foundation, said every person uses about one and a half liters of edible oil in a month.

In 2017, a total of 2,300 crore tonnes were used in the country and by 2030 it is expected to reach 3,400 tonnes per year. He said that more the edible oil is used, the more it is produced in used cooking oil.

Published in:

Hindustan Times



CSIR-IIP

7th December, 2019

इस्तमाल खाद्य तल स आइआइपा म बायाफ्यूल बनना शुरू

जागरण संवाददावा, देहरादून : भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (आइआइपी) ने इस्तेमाल किए गए खाद्य तेल से बायोडीजल बनाया शुरू कर दिया है। शुक्रवार को सुभाष रोड स्थित एक होटल में बकायदा खाद तेल से बायोडीजल बनने की प्रक्रिया को दिखाया गया। वहीं पहली रिपर्पज युज्ड कृकिंग आयल (रुको) एक्सप्रेस को झंडी दिखाकर आइआइपी में लगाए गए प्लांट के लिए रवाना भी किया गया।

आइआइपी, खाद्य सुरक्षा विभाग और है, जहां शहर भर से इस्तेमाल खाद्य गति फाउंडेशन की ओर से आयोजित तेल को बायोपयुल में तब्दील किया जा कार्यक्रम में रुको एक्सप्रेस को हरी झंडी सकेगा। यहां पर कोई आमजन भी 20 दिखाकर खाद्य सुरक्षा आयुक्त डॉ. पंकज रुपये प्रति लीटर की दर से अपने घर में पांडेय और आइआइपी के निदेशक डॉ. इस्तेमाल खाद्य तेल बेच सकता है। खाद्य अंजन रे ने रवाना किया। आइआइपी में सुरक्षा आयुक्त डॉ. पंकज पांडेय ने कहा इस्तेमाल खाद्य तेल से बायोपयुल बनाने कि खाद्य तेल का जितनी बार इस्तेमाल



दून स्थित भारतीय पेट्रोलियम संस्थान 💩 आकड़िव

इस्तेमाल खाद्य तेल जमा करने को मोबाइल प्लांट

50 लीटर तक के इस्तेमाल खाद्य तेल से बॉयोपयुल बनाने का प्लाट एक ट्रक में लगाया जा सकता है। खाद्य सुरक्षा विभाग दून के व्यापारियों के लिए संपर्क नंबर जारी करेगा, जिस पर कॉल करके इस मोबाइल प्लांट को अपने कार्यस्थल पर ही बुलाकर बायोपयुल पैदा कर सकते हैं। अक्सर व्यापारियों को इस्तेमाल खाद्य तेल फेंकना पड़ता है। लेकिन इस तेल से बायोपयूल बनने से व्यापारियों को लाभ पहुंचेगा।

के लिए 50 लीटर का प्लांट लगा हुआ किया जाता है, वह स्वास्थ्य के लिए उतना जीन बार इस्तेमाल किया गया चुके खाद्य तेल से बायोडीजल बनाने

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नीरज आत्रे समेत कई अफसर व व्यापारी मौजूद रहे।

ही खतरनाक होता जाता है और इससे तेल भी उपयोगी: भारतीय पेट्रोलियम कैंसर जैसे गंभीर रोगों को भी खतरा संस्थान के निदेशक डॉ. रंजन रे ने बताया बना रहता है। इस दौरान जिला खाद्य कि तीन बार इस्तेमाल हो चुके खाद्य तेल सुरक्षा अधिकारी जीसी कंडवाल, गति से बायो डीजल भी बनाया जा सकता फाउंडेशन के निदेशक अनूप नॉटियाल, है और जेट पयुल भी। आइआइपी का उद्देश्य है कि देश के कम से कम 10 प्रतिशत गांवों में इस्तेमाल किए जा

का प्लांट लगाया जाए। आइआइपी 20 रुपये प्रति लीटर के हिसाब से इस्तेमाल तेल खरीदेगा। इस तेल का 90 प्रतिशत हिस्सा बायोडीजल बनाया जा सकेगा। आइआइपी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नीरज आत्रे ने इस मौके पर तेल से बायोडीजल बनाने का प्रयोग करके भी दिखाया। बायोपयुल में आत्मनिर्भता की ओर: गति फाउंडेशन के अनुप नौटियाल ने बताया कि हर व्यक्ति एक महीने में लगभग डेढ लीटर खाद्य तेल इस्तेमाल करता है। वर्ष 2017 में देश में कुल 2,300 करोड़ टन इस्तेमाल किया गया था और 2030 तक इसके 3,400 टन प्रतिवर्ष पहुंचने की संभावना है। हर व्यक्ति के हिस्से का इस्तेमाल खाद्य तेल जमा किया जाए तो देश बायो डीजल के उत्पादन में काफी हद तक आत्मनिर्भर हो जाएगा।

Published in:

Dainik Jagran



Trials found ayurvedic drug BGR-34 has therapeutic efficacy on newly diagnosed type-2 diabetes: Govt

CSIR-CIMAP, NBRI

6th December, 2019

Independent clinical trials conducted at the Banaras Hindu University (BHU) revealed that ayurvedic drug BGR-34 has therapeutic efficacy for treating newly diagnosed type-two diabetes, AYUSH Minister Shripad Naik informed the Lok Sabha on Friday. The diabetic population in the country is close to hitting an alarming mark of 69.9 million by 2025, which denotes that instances of the disease in the country is expected to witness an increase of 266 per cent, Naik said in a written reply. The Council of Scientific and Industrial Research (CSIR), through its constituent laboratories — CSIR-Central Institute of Medicinal and Aromatic Plants (CSIR-CIMAP), and CSIR-National Botanical Research Institute (CSIR-NBRI), both in Lucknow, developed scientifically validated herbal product NBRMAP-DB as anti-diabetic formulation, the minister said.

The product know-how was licensed to M/s AIMIL Pharma Ltd, Delhi, who are manufacturing and marketing it as BGR-34, across the country, he said. "M/s AIMIL Pharmaceuticals, the licensee, carried out the clinical study of BGR-34 and the trial was registered in clinical trial registry of India. Further, the formulation has shown therapeutic efficacy for treating newly diagnosed type 2 diabetes, as found in independent clinical trials conducted at Banaras Hindu University (BHU), Varanasi," Naik said. "The Central Council for Research in Ayurvedic Sciences (CCRAS), an autonomous body under the Ministry of AYUSH, has been engaged in extending research-oriented ayurveda based on integrative health care services for management of "madhumeha" which is diabetes mellitus," the Union minister said. As part of their core activities, the CCRAS in collaboration with the Directorate General of Health Services, Ministry of Health, has implemented and executed a programme — integration of AYUSH (Ayurveda) component with NPCDCS (National Programme for prevention and control of cancer, diabetes, cardiovascular diseases



and stroke) programme in Bhilwara (Rajasthan), Surendranagar (Gujarat) and Gaya (Bihar) to reduce the burden of non-communicable diseases (NCDs), including diabetes by combining the strength of ayurveda and yoga. The programme was launched in 2016. It is now functional in 52 centres of the three identified districts through AYUSH-NPCDCS clinic/lifestyle modification clinics, established for prevention and management of selected NCDs by ayurvedic intervention, lifestyle modifications and yoga advice, Naik said.

He said the CCRAS had developed the AYUSH82 formulation for diabetes through scientific process of drug development and commercialized through National Research Development Corporation (NRDC) for wider public utility.

The CCRAS has published the documents — Protocol on Prevention and Management for Diabetes Mellitus — and a compendium of research articles on diabetes mellitus which are made available in the public domain for benefit of practitioner, physician and researchers. PTI PLB PLB NSD NSD

Published in:

OutLook



CSIR-NBRI

6th December, 2019

निजी संस्थाओं द्वारा हर क्षेत्र में भी

हरियाली के लिए पौधशालाएं हैं,

मन चाहे फूल लगाएं

हीं बनती है।

लगाएं ये फूल

पिटूनिया आदि ।

इस मौसम में लगभग 50-60 किस्म के

फूल खिलते हैं। इन फूलों की विविधता

देखने लायक होती है। चाहे रंग हों या

खुबसूरत आकार, फूलों की छटा देखते

पलाक्स, आइस पलावर, हेलीक्राइसम

पी, साल्विया, सिनरेरिया, पैंजी, बर्बिना,

केंडीटपट, एंटीराइनम (डॉग फ्लावर),

डायंथस, कार्नेशन, गेंदा, कॉसमॉस,

(पेपर फ्लावर), सेंटेरिया, गजेनिया, स्वीट

जहां से पीघे खरीदे जा सकते हैं।

एनबीआरआइ में दो दिवसीय गुलदाउदी एवं कोलियस प्रदर्शनी सात से, बागवानी के शौकीनों को मिलेगा पुरस्कार

अलीगंज

इस शानवार-राववार फुलों की बहार...

चारों तरफ हरियाली के बीच मुस्कराते फूल मानों आपको हर दुख-ददे भूलकर अपने साथ चहकने का आमंत्रण दे रहे हैं। वीकेंड हो और फूलों का साथ हो, भला कौन ऐसे मौके को हाथ से जाने देगा। आपको भी ऐसा मौका मिलने वाला है, जब आप ढेर सारे फुलों की खुबसुरती निहारकर उनसे बातें कर सकेंगे। ...तो तैयार हो जाइए इन खुबसुरत पली को अपने जेहन और कैमरे में कैद करने के लिए, क्योंकि वीकेंड पुष्पप्रिमियों के लिए बेहद खास होने वाला है। सीएसआइआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनवीआरआइ) में शनिवार से दो दिवसीय गुलदाउदी एवं कोलियस शो की शुरुआत होने जा रही है। इस वार्षिक प्रदर्शनी की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। पृष्पप्रेमी गुलदाउदी की दर्जनों किस्मों के दीदार कर सकेंगे। रंग-बिरंगे फुलों से सजी बिगया में आप न केवल सेल्फी ले सकते हैं. बल्कि मनपसंद फूलों को करीब से निहार भी सकते हैं। ठंड के मौसम में खिले फुलों के साथ सजावटी पौधों और गमलों की रेंज आपके दिन को खुशनुमा बना सकती है। पुष्प प्रदर्शनी में क्या है खास, कैसे लगाएं फूल, पृष्पों एवं पौधों के औषधीय गुण और महत्त्व को बताती जागरण सिटी की रिपोर्ट...

जा ड़े का मौसम और चटक रंग-बिरंगे फूलों का साथ पुष्प प्रेमियों को खासतौर पर रास आता है। यह वीकेंड ऐसे लोगों के लिए बेहद खास होने वाला है। एनबीआरआइ की ओर से आयोजित दो दिवसीय गुलदाउदी एवं कोलियस शो की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। इस प्रदर्शनी में पुष्प प्रेमी गुलदाउदी की दर्जनों किस्मों के दीदार कर सकेंगे। यहां एनबीआरआइ की ओर से विकसित किस्मों के साथ एकत्रित जर्मप्लाज्म (किस्मों) का भी प्रदर्शन करेगा। इसके अलावा बागवानी के शौकीन शहरी भी अपने-अपने पौधों को विभिन्न ट्रॉफी के लिए खेंगे।

एनबीआरआइ के वरिष्ठ मुख्य वैज्ञानिक व गार्डन इंचार्ज डॉ.एसके तिवारी बताते हैं कि प्रतियोगी 23 रनिंग ट्रॉफी के लिए अपने फुलों पर दांव लगाएंगे। ट्रॉफी को पिछले विजेताओं के पास से वापस एकत्र करना कठिन कार्य था। इसमें बहुत समय व श्रम बर्बाद होता है। ट्रॉफी 30-40 साल पुरानी हो चुकी है। इसलिए इनका रखरखाव भी कठिन है। कई ट्रॉफी की लकड़ी गल चुकी है तो यह भी नहीं पता है कि आखिर रनिंग ट्रॉफी किसके नाम से दी जा रही है। इसलिए इस बार कुछ बदलाव किया जा रहा है। जिसके नाम से रनिंग ट्रॉफी चल रही है, उनसे कहा गया है कि वे वा उनके परिवारीजन स्वयं समारोह में शामिल पुरस्कृत करेंगे।



पिछले वर्ष एनबीआरआइ में लगी प्रदर्शनी में दिखी थी कई प्रकार के फूलों की रंगत 🛭 जागरण आर्काइव

गुलाब की करें कटिंग

गुलाब की कटिंग करने का यह उपयुक्त समय है। कटिंग करके कटे हुए स्थान पर किसी भी फंटीसाइट जैसे बावस्टीन, कैपटन आदि का गाढ़ा पेस्ट लगा दें इससे कटे हुए स्थान से पौषा खराब नहीं होगा। इसके अलावा गुलाब की जड़ों से थोड़ी मिट्टी निकाल दें जिससे जड़ों को धूप लग जाए।तीन-चार दिन के बाद फिर खाद, मिट्टी व नीम की खली का मिश्रण मिलाकर भर दें। इससे फूल और बड़े आएंगे।

होकर ट्रॉफी वापस दें। पुष्प प्रदर्शनी का नहीं कि आपके पास गार्डन उपलब्ध खाद व एक हिस्सा नीम की खली का में फुलों और सजावटी पौधे लगाने को पौधों के महत्व को मान्यताओं के आधार इन पौधों को लगाने के लिए यह जरूरी वीन हिस्सा मिट्टी, एक हिस्सा गोबर की बताए जाएंगे औषधीय गुण : इस मौसम जाएगा। राजकीय उद्यान में लोगों को पेड़ महत्व है।

सप्ताह के हर दिन पेड-पौधे की विशेषता

हिंदू धर्म में सप्ताह के हर रोज किसी न किसी देवता की पूजा की जाती है और उन्हें प्रसन्न करने के लिए प्रिय चीजें उन्हें चढ़ाई जाती हैं। पं. जितेंद्र शास्त्री ने बताया कि भगवान शिव को बेल पत्र, तो गणेश जी को दुर्वा, देवी मां को प्रसन्न करने के लिए लाल गुड़हल का फूल चढ़ाया जाता है। शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए पीपल की पूजा की जाती है। सीता जी जिस पंचवटी में भगवान राम के साथ रही थीं, उसमें पांच वट यानी वृक्ष थे, जिनका हिंदू धर्म में विशेष महत्व है।

लॉन के

आलमबाग

समापन रविवार को होगा। विधि एवं हो। आप गमलों में पौधे लगाकर पोर्च, मिश्रण तैयार करें। इस मिश्रण को थालियों लेकर जागरूकता फैलाने की पहल पर भी बताया जा रहा है। उद्यान विशेषज्ञ न्याय मंत्री ब्रजेश पाठक विजेताओं को बालकनी, छतों को गुलजार कर सकते या क्यारी में भरकर बीज रोपें। तीन सप्ताह राजकीय उद्यान आलमबाग में शुरू हुई बालीशरण चौधरी ने बताया कि पूजा-हैं। राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान में पौधे तैयार हो जाएंगे इन पौधों को जहां है। अधीक्षक डॉ. जयराज वर्मा ने बतावा पाठ, रोग व खानपान, हर कहीं पौधों आया दिलकश फूलों का मौसमः (एनबीआरआइ) के उद्यान प्रभारी डॉ. लगाना हो वहां ट्रांसप्लांट कर सकते हैं। कि कुछ लोग पौधे ले तो जाते हैं, लेकिन का प्रयोग होता है। मराठियों में हर वर्ष जाड़ा यानी चटक रंग के फूलों का आर के रॉय बताते हैं कि यदि लॉन में यदि आपको कुछ पौधे चाहिए हों तो सही तरीका पता न होने के कारण पौधे प्रतिपदा में कड़वी नीम की पत्ती खाने का मौसम। एक, दो, तीन नहीं बल्कि दर्जनों पौधे लगाने हों और अधिक संख्या में सीधे नर्सरी से लाकर पौधे लगा सकते बढ़ नहीं पाते। ऐसे में यहां से पौधे लेकर रिवाज है, जिससे त्वचा और पेट संबंधी किस्म के फूल इस सीजन में गार्डन की पौधे चाहिए हों तो थालियों या क्यारी में हैं। शुरुआत में पौधों की सिंचाई सुबह- जाने वालों को पौधरोपण की जानकारी रोगों का खतरा कम हो जाता है। भारतीय

ताकि लोगों के बीच बढे

एनबीआरआइ के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. एसके तिवारी बताते हैं कि संस्थान बीते पांच दशकों से पुष्प प्रदर्शनी का आयोजन कर रहा है। उददेश्य, लोगों के बीच फूलों के प्रति रुझान बद्धाना और पुष्प प्रेमियों को नई-नई जानकारी देना है। फूलों को उनके रंग, आकार-प्रकार के हिसाब से वर्गीकृत किया जाता है। अलग-अलग वर्ग में विजेता ट्रॉफी के लिए अपने फूल रखते हैं। पुष्प प्रेमियों को यहां बीज, पौधे व बागवानी के उपकरण मिल सकें, इसके लिए स्टॉल भी लगाए जाते हैं।

खरीदें इंडोर प्लांट्स

प्रदर्शनी में इंडोर प्लांट्स, गुलदाऊदी के पौधे, कैक्ट्स व सकुलेंट भी बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे।

कोलियस की बिखरेगी छटा

रंग-बिरंगे फलों के साथ कोलियस के चटक रंग भी प्रदर्शनी में अपनी छटा बिखेरेंगे। कोलियस की दर्जनों किस्मों का नजारा दर्शकों को आकर्षित करेगा। वहीं, गुलदाउदी की 200 से अधिक किस्मों का नजारा भी दर्शक ले सकेंगे।

नक्षत्र-नवग्रह वाटिका

आयुर्वेदिक और धार्मिक ग्रंथों में जिन 27 नक्षत्रों का नाम है, उनके साथ वृक्ष भी जुड़ा है। मान्यता है कि अपने जन्म नक्षत्र के अनुसार इन पौधों को लगाने वाले का कल्याण होता है। आचार्य एसएस नागपाल ने बताया कि नवग्रहों की शांति के लिए भी पेड़ उपयोगी हैं। मसलन सूर्य की शांति के लिए आक का पौधा लगाना चाहिए। चंद्र-ढाक, मंगल-खैर, बुध-चिचिड़ा, गुरु-पीपल, शुक्र-गुलर, शहन-शमी, राहु-दूब और केतु- कुश।



Published in:

Dainik Jagran



CSIR-CSMRI

6th December, 2019

ભાવનગરની C.S.M.C.R.I. એ સૌરાષ્ટ્રના દરિયામાં ૪ સ્થળે ૧૬૨ લાભાર્થીને આપી તાલીમ ખારા પાણીમાં ખેતી : 'ગ્રાસિલેરિયા ડ્યુરા' દારા થઈ શકે અઢળક આવક

૪૦થી ૪૫ દિવસમાં જ છોડ ખૂબ વિકસી શકે છે : છોડમાં રહેલો ૭૦થી ૮૦ ટકા ભાગ ઉત્તમ ઓર્ગેનિક ખાતર બની શકે છે

I dildelais (sign Apple) 1

ભાવનગરની સેન્ટ્લ સોલ્ટ એન્ડ મરીન કેમિકલ્સ રીસર્ચ ઈન્સ્ટીટયુટ (સી. એસ.એમ.સી.આર.આઇ.)ને નેશનલ ફિશરીઝ ડેવલપમેન્ટ બોર્ડ (એન.એફ. ડી.બી.) દારા બે વર્ષ અગાઉ ૨૦૧૭ની સાલમાં મળેલા પાજેક્ટ અન્વય દરિયામાં લાલ શેવાળની ખેતીને સફળતા મળી છે અને તાલીમ લેનાર ૧ દર લાભાથીઓને આવકનો નવો ઝરિયા પ્રાપ્ત થયો છે.

હતી. જેમાં સૌરાષ્ટ્રના સિમર. રાજપરા, પદ્ધતિના ઉપયોગ થાય છે. જેમાં ઓખા અને હાથબના લાભાશીઓનો 'માનોલાઈન' અને 'ટયૂબનેટ'નો સમાવેશ થાય છે. સામાન્ય રીતે સમાવંશ થાય છે. દરિયામાં જે ખડકાળ કહિન ભાગ હોય



શેવાળ ની ખેતી શરૂ કરવામાં આવી છે. આ રીતે કલ્ટીવેશન કરવા માટે ર

આ પોજેક્ટ અંતર્ગત લાભાચીઓએ

ડ્યુરા' (લાલ શેવાળ) જોવા મળે છે. તેની પદ્ધતિઓને ઉપયોગ કર્યો હતો. આ હોય છે. જે ઉત્તમ ઓર્ગેનિક ખાતર વિશિષ્ટતા એ છે કે. આ માટે સમુદ્રી છોડના વિકાસ બાદ છોડનો થોડો ભાગ તરીકે કામ આપી શકે છે અને તેને ડ્રાય ડોક્ટર મોનિકા કવલે, ઇફ્ફ્કો કંપનીના એન.એક.ડી.બી. પોજેક્ટની શરૂઆત શેવાળ 'ચાસીલેરિયા ડ્યુરા' માટે ખારું તેમાં જ રાખીને બાકીના ભાગનું કરવાથી તેમાંથી આગાર અને અગારોજ સ્ટેટ લેવલના પ્રતિનિધિ ડો. ખોજા, ઈ.સ.૨૦૧૭માં શરૂ કરવામાં આવી પાણી જ બધુ છે તેમ કહી શકાય. જો હાર્વેસ્ટીંગ કરવામાં આવે છે. આમ, બને છે. મજાની વાત એ છે કે, નેટમાં એકવા એમી પ્રોજેકટના હેડ તન્મય શેઠ હતી. જેમાં ૧ ર ૨ લાભાર્થી જોડાયા હતા. નાના એવા છોડને ઉછેરવામાં આવે તો કલ્ટીવેશનથી હાર્વેસ્ટીંગ સુધીની એક બાકી રખાયેલો થોડોક ભાગ પુનઃ વિકસે તેમજ સીમાર ગામડાના સરપંચ આ પ્રોજેક્ટ દારા ચાર જગ્યાઓમાં ૪૦થી ૪૫ દિવસમાં જ ખૂબ વિકસી શકે સાઇકલ છે. આ એક સાઇકલના છે અને આ રીતે ખેતીની સાઈકલ નાજાભાઈ સાંખટ અને સીમર ગામના લાભાચીઓને રા. ૧૦૦૦ થી લઈને ચાલતી રહે છે. લાભાથીઓને આ ખાસ સમુદ્રી શેવાળની ખેતીમાં હાર્વેસ્ટ થયેલાં પ્રોજેક્ટ દ્વારા પૂર્વ જરૂરિયાતની વસ્તુઓ ભાગ રો-મટિરિયલ સ્વરૂપે પણ વેંચાઈ પૂરી પાડવામાં આવતી હતી. સમુદ્રી સફળતા અને ૧૬૨ તાલીમાથીઓને શકે છે અને ડ્રાય કરીને પણ. તેના શેવાળની ખેતી કરવાનો મુખ્ય હેતુ મળેલી તાલીમથી ખેતીનો નવો માર્ગ

રૂા.૧૨૦૦૦ સુધીનું વેતન મળ્યું હતું. શેવાળની ખેતી માટે એન.એફ.ડી.બી. આમ, સાસિલેરિયા ક્યુરાની ખેતી છે ત્યાં ખાંચા કોતરામાં 'માસીલેરિયા મોનોલાઈન અને ટયુબનેટ એવી ૨ છોડમાં ૭૦થી ૮૦ ટકા ભાગ પાણીનો લાભાર્થીઓને ખેતી માટે સ્વનિર્ભર પણ મળ્યો છે અને આવક પણ.

બનાવવાનો હતો. આ પાજેક્ટ દારા લાભાષીઓએ લગભગ ર વર્ષ માં ર ટન મટિરિયલનું ઉત્પાદન કર્યું હતું. જે 30 मायं, २०१८ ना रोश पूर् वयु छत्.

તાજેતરમાં સૌરાષ્ટ્રના ઉના નજીકના સીમર ગામ ખાતે એન.એફ.ડી.બી. દારા ખાસ પાંચામનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. જેમાં સી.એસ.એમ.સી. આર.આઇ.ના સીનિયર પ્રિન્સિપલ સાયન્ટીસ્ટ ડોક્ટર અરૂપ ઘોપ, વેશાનિક લાભાથીઓ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા.

માટે હાથ ધરાયેલા આ પ્રોજેક્ટને મળેલી

Published in:

Sandesh



CSIR-CBRI

6th December, 2019

Students Learnt About Importance Of Soil-Pledged To Plant Trees For Soil Consevationa

Roorkee: Central Building Research Institute, Roorkee scientists visited Government Upper Primary School, Khanjarpur, Roorkee on December 05, 2019 on the occasion of World Soil Day 2019, under Jigyasa: Student-Scientist Connect Programme.

Interacting with the students, Dr. Atul Kumar Agarwal, Senior Principal Scientist & Jigyasa Programme Coordinator, CSIR-CBRI, Roorkee presented a lecture on 'Jigyasa: Importance of Soil" and informed the students about the theme of World Soil Day 2019 - "Stop Soil Erosion, Save our Future". He explained that the top-most fertile soil erodes or is contaminated due to various reasons such as erosion from strong wind/water flow, continuous cultivation without re-establishing soil nutrients, excessive deforestation weakening soil grip, increased pollution and chemical contamination etc. This top soil is essential for the growth of nutrients and development of microorganisms that are essential for fertility of soil and healthy crop

growth. This results in a decrease in soil fertility. It is a serious problem not only for the farmers but also for all of us. If soil erosion occurs, the food-producing crops will not grow well. Erosion can also lead to large sinkholes in the ground, which may weaken buildings and cause them to collapse. Thus, it is essential to prevent soil erosion and protect it from contamination. Dr. Agarwal also discussed soil conservation measures such as strengthening soil through roots by plantation of deep-root trees, prohibition of plastic, prevention of soil pollution from industrial or chemical wastes, maintaining fertility of soil with green manure, limited use of chemical fertilizers, conservation of soil's natural nutrients by crop rotation, terrace farming on hilly areas etc. Dr. Agarwal informed that World Soil Day plays an integral role by addressing the increasing challenges in soil management, raising awareness about its importance in maintaining a healthy ecosystem and human welfare and encouraging governments, organizations, com-

munities and individuals around the globe for soil conservation. India is celebrating 150 years of the Mahatma by following the principles of Mahatma Gandhi throughout the year. Dr. Agarwal asked the students to work towards building a Swachh Bharat. The students pledged to plant trees for environment protection, pollution control, soil conservation, and expressed their commitment to spread this message to all.

Dr. Agarwal also informed the students about environment-friendly building materials, waste-to-value added products and technologies for rural India developed by CSIR-CBRI, Roorkee. Students discussed career opportunities at CSIR in various areas of science.

About 75 students of Government Upper Primary School, Khanjarpur, Roorkee along with their Principal Shri Ramdas Singh and teachers Shri Yogendra Singh, Smt. Basudha Barthwaal, Smt. Basudha Barthwaal, Smt. Poonam Sharma, Smt. Kela Devi etc. were present during the occasion.

Published in:

The Hawk



CSIR-CBRI

6th December, 2019

स्वच्छ भारत निमाण का लिया सकल्प

जागारण संवादवता, रुहकीः केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआइ) मुदा दिवस खजरपुर स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में विद्यार्थियों किया। साथ ही छात्रों को स्वच्छ भारत के निर्माण का संकल्प भी दिलाया गया।

सीबोआरआइ के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक और कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अतुल अग्रवाल ने विद्यार्थियों को जिज्ञासा-मिद्री का मोल विषय पर व्याख्यान दिया। विद्यार्थियों को समझाया कि तेज हवा या पानी से कटाव, मिड़ी के पोषक तत्वों को पुनः स्थापित किए बिना लगातार खेती, वृक्षों के अत्यधिक विकास और चमक के लिए आवश्यक विकसित नहीं होंगी। कटाव से जमीन से ही पर्यावरण की भी रक्षा हो सकेगी। कटाव से मिट्टी की पकड़ कमजोर होने, होते हैं। इससे मिट्टी की उर्वरता में कमी में बड़े सिंकहोल भी हो जाते हैं। जो इसके लिए सभी लोगों को भी आगे आने बहते प्रदूषण जैसे अनेक कारणों से मिट्टी उत्पन्न होती हैं। की ऊपर की सबसे उपजाऊ परत खत्म या दूषित हो जाती है। वह शीर्ष मिट्टी उन हम सबके लिए एक गंभीर समस्या है। ऐसे में मिट्टी के कटान को रोकना और वसुधा बर्थवाल, पूनम शर्मा, केला देवी पोषक तत्वों और सुक्ष्म जीवों के विकास यदि मिट्टी का क्षरण होता है तो भोजन



खंजरपुर स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में बच्चों को खच्छ भारत के निर्माण का संकल्प दिलाते सीबीआरआइ के विरुट प्रधान वैज्ञानिक हा. अतुल कुमार अग्रवाल व शिक्षक रागिद्र सिह। दाएं से बाएं । आयोजक

के लिए आवश्यक है, जो पौधे के

वह किसानों के लिए ही नहीं, बलिक

बनाने वाली फसलें अच्छी तरह से उनके दहने का भी कारण बन सकते हैं। प्रधानाचार्य रामदास सिंह, योगेंद्र सिंह, उसको दूषित होने से बचाना आवश्यक

है। इसके लिए सभी लोगों को जानकारी होना भी बेहद जरूरी है। इस दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है।

डॉ. अग्रवाल ने विद्यार्थियों के साथ मृदा सरक्षण के कुछ उपायों जैसे-पोधरोपण कर पेड़ों की जड़ों से मिट्टी को मजबूती देना, एलास्टिक का निषेध, औद्योगिक अथवा रासावनिक कचरे से होने वाले मिद्री के प्रदूषण से बचाव, हरित खाद से मिट्टी की उर्वरता बनाए रखना, रासायनिक उर्वरों का सीमित प्रयोग, फसल के चक्रीकरण से मिड़ी के प्राकृतिक पोषक तत्वों का संरक्षण, पहाड़ों पर टरेस फामिंग आदि विषयों पर भी चर्चा की। उन्होंने बताया कि स्वच्छता इमारतों को कमजोर कर सकते हैं और की जरूरत है। कार्यक्रम में विद्यालय के आदि मोजद रहे।

Published in:

Dainik Jagran



CSIR-IITR

6th December, 2019

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस से सुरक्षित रहेगा खाना'

मामेश बेगल ने

विया त्याख्यान

लखनऊ। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई) का उपयोग खाने को सुरक्षित बनाने में होना चाहिए। इसके लिए मौजूद तकनीक में ये संभावनाएं देखी जा सकती हैं। यह बात बृहस्पतिवार को आईआईटी दिल्ली के प्रोफेसर डॉ. गणेश

बैगलर ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टोक्सिकोलॉजी रिसर्च (आईआईटीआर) में आयोजित 5वीं इंटरनेशनल टॉक्सिकोलॉजी कांफ्रेंस (आईटीसी) में कही। डॉ. बैगवन लेवरेजिंग आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस फॉर डाटा ड्रिवन फूड इनोवेशन

विषय पर व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कहा कि हमें खान-पान से जुड़ी आदतों व इनकी आपूर्ति का डाटा तैयार करना होगा। इसका उपयोग कर इसे लोगों के उपभोग के लिए सुरक्षित बनाया जा सकता है। संस्थान के निदेशक डॉ. आलोक धवन ने कहा कि आईटीसी को शुरू करने का उद्देश्य था दुनिया की समस्याओं का हल ढूंढ़ना। सीएफटीआरआई मैसूर की वैज्ञानिक डॉ. महजबीन खान ने बताया कि एंटी माइक्रोबियल तकनीक का विकास कर लिया गया है। इससे खाने को लंबे समय तक खराब होने से बचा सकेंगे।।



आईआईटीआर में हुई कॉन्फ्रेंस में मौजूद विशेषज्ञ।

लगातार फसल बोने से मिट्टी को खतरा

लखनऊ। एनबीआरआई में बृहस्पतिवार को विश्व मृदा दिवस मनाया गया। जिज्ञासा कार्यक्रम में केंद्रीय विद्यालय गोमतीनगर के बच्चों ने इस बीच लैब में जाकर खुद भी टेस्ट किए। बच्चों को मुख्य वैज्ञानिक डॉ. पीए शिर्के ने बताया कि किसान अधिक आय के लिए एक के बाद एक फसल बोता है। इससे भी मृदा क्षय होता है। वनों के अंधाधुंध कटान को भी रोकना होगा। वैज्ञानिक डॉ. एसके तिवारी ने बताया कि मृदा प्रबंधन एक कठिन कार्य है। निदेशक डॉ. एसके बारिक भी मौजूद रहे।

Published in:

Amar Ujala



CSIR-IICT

6th December, 2019

साएसआइआर-आइआइसाटा म तकनाका हिन्दा कायशाला आयाजत



और डिजिटलाइजेशन के कारण आज द्वारा दिये गये राजभाषा कार्यान्वयन कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों के बाद भी हैं और एकार्य भी होते हैं। किसी भी अधिकारी) ने सहयोग प्रदान किया।

सीएसआईआर-भारतीय रासायनिक हिन्दी कार्यान्वयन की इच्छा के साथ करें।

हैदराबाद, 5 दिसंबर-(मिलाय ब्युरो) प्रत्येक काम आसान हो गया है। हमें के विनिर्देशों का शत-प्रतिशत पालन उसकी राह के रोड़े और समस्याएँ

'विज्ञान के प्रचार व विकास में द्वारा किये जा रहे सामाजिक मूल्य के संबोधन में कहा कि मातृ भाषा के समस्याओं का समाधान ढुँढ़ने का काम राजभाषा हिन्दी : समस्या व समाधान' कार्यों का ब्योरा प्रस्तुत किया। अलावा अन्य भाषाओं को सीखने व तो भाषाविज्ञानियों और विद्वानों का है, प्रशासनिक अधिकारी शैलजा। अंगीकृत करने की दिशा में हमें अपने। किन्तु बाह्य समस्याओं का समाधान। सकता। यह भिन्न-भिन्न रंगों में उपलब्ध समिति के सदस्यों के लिए विशेष महली ने संस्थान के कार्यावयन का आपको प्रेरित करते रहना चाहिए। पूरे राष्ट्र की मानसिक वागरूकता पर है, विसका प्रयोग आसान होगा। इस तकनीकी हिन्दी कार्यशाला का संक्षिप ब्यौरा देते हुए सभी प्रतिभावियों वर्तमान में यह आवश्यक भी हो गया निर्भर करता है। भारत वैसे बहुजादीय हेतु किसी भी विशिष्ट उनकरणों की आयोजन किया गया। अवसर पर को संस्थान कर दौरा करने के लिए हैं। हिन्दी के विकास के लिए उसकी बहुभाषी देश में राष्ट्रभाषा की राह में आवश्यकता नहीं है, लेकिन अभी तक संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सूर्य आमीजन किया।कार्यक्रम का संचालन शुद्धता पर अधिक ध्यान न देकर उसे रोड़े आन्त अस्वाधाविक नहीं है, किन्तु इस रंग का व्यावसायीकरण नहीं हुआ प्रकाश सिंह अतिथि वक्ता के रूप में संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ. निर्बाध गति से बहने देने के लिए अपने जागरूक राष्ट्र के लिए उन्हें इल कर है। अतिथि वक्ता के सम्मान एवं एस. नसीमा ने किया। सहायक प्रांतों की संस्कृति और भाषा को जब लेना भी कठिन नहीं है। उन्होंने कहा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम आन यहाँ जारी प्रेस विज्ञानि के निदेशक एवं सविव नगर राजभाषा हिन्दी में लाया जाएगा, तभी हिन्दी का कि विज्ञान के क्षेत्र में भाषा के प्रयोग संपन्न हुआ। कार्यशाला में संस्थान के

प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद में काम करना चाहिए। उन्होंने संस्थान डॉ. सूर्य प्रकाश सिंह ने अपने भी हैं और बाहय भी। अंदरूनी

प्रवत्तियाँ हैं। उन्होंने कहा कि राजभाषा रहता है। हिन्दी का प्रयोग हर क्षेत्र में अनिवार्य हो गया है। इसलिए कि हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। उन्होंने कहा कि सौर ऊर्ज कमोबेश बने हुए हैं। समस्याएँ अंदरूनी के लिए संस्थान में एक अनोखा रंग बनाया जा रहा है, जिसके प्रयोग से सिलिकॉन पैनलों की तुलना में कम खर्च में सौर ऊर्जा का दोहन किया जा अनुसार, संस्थान के प्रशासन नियंत्रक कार्यान्वयन समिति अनिता पांडे ने प्रचार व प्रसार होगा। को अधिक पेचिदा नहीं करना हो, तो हिन्दी अनुभाग की एस. साई भवानी बिनोद दुबे ने सभी प्रतिभागियों का नराकास की महत्ता पर प्रकाश डालते उन्होंने कहा कि हिन्दी राष्ट्रभाषा बन तकनीकी शब्दों को आरंभ में जैसे के (सहस्यक अनुभाग अधिकासी), स्वानत किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी हुए कहा कि सभी संस्थान समिति से गई, इसे राजभाषा का दर्जा भी मिल तैसे प्रयोग में लाना चाहिए, इसलिए प्रफुल्ल पासवान (आशुलिपिक) एवं देश की भाषा है। आधुनिक सुविधाओं संबंध बनाये रखें तथा भारत सरकार गया, लेकिन यह एक दुखद सत्य है कि तकनीकी शब्द अर्थ रूढ हुआ करते. सत्यनारायण नेमानि (हिन्दी

गति देने वाली भाषक प्रवृत्तियाँ ही

व्यावसायिक राजभाषा हिन्दी की

Published in:

Daily Hindi Milap



CSIR International Conclave addresses issues of food safety, data science & pollution

CSIR-IITR 6th December, 2019

Taking forward the industry-academia interaction a two-day International Toxicology Conclave (ITC) was inaugurated at Council of Scientific and Industrial Research-Indian Institute of Toxicology Research (CSIR-IITR). In the conclave, scheduled on 5 & 6 December, experts from academia, industry and regulatory bodies deliberated on topics in niche areas in toxicology like food safety for the future, influx of data science in toxicology & health, and abating pollution and its remediation. Professor Alok Dhawan, Director, CSIR-IITR said, "ITC is an effort to bring researchers, industry representatives and policymakers on a common platform so that a synergy can be developed among all to tackle and resolve the emerging issues of food safety, health and the environment using interdisciplinary approaches." Dhawan said CSIR-IITR is organizing ITC annually since 2015 and it is being celebrated as a part of annual day celebration.

Inaugurating the conclave, Professor Pramod Tandon, CEO, Biotech Park, Lucknow said that that CSIR-IITR has a vital role to play in the area of abating pollution and developing remediation measures to tackle the current scenario. "Research driven initiatives are the need of the hour to ensure food safety and availability of safe food for the generations to come." said Tandon. Professor SK Barik, Director, CSIR-National Botanical Research Institute (CSIR-NBRI) said that in this day and age of data driven strategies leveraging the benefits of data sciences for improving human health are vital. Sessions on different topics took place at the conclave. The keynote address on the topic food safety for future was delivered by Dr Sanjay Kumar, Director CSIR-Institute of Himalayan Bioresource Technology (CSIR=IHBT). A lecture on the topic 'Computational Gastronomy: Leveraging Artificial Intelligence for Data-driven Food Innovations' was delivered by Dr Ganesh Bagler from the Indian Institute of Technology, Delhi.



Anoop Kumar Mishra from Reckitt Benckiser Private Limited delivered a talk on Food Safety: A Public Health Priority. Dr M. K. R. Mudiam, Senior Principal Scientist, CSIR-Indian Institute of Chemical Technology (CSIR-IICT), Hyderabad, delivered a talk on the Newer Analytical Strategies in Food Safety Management System. Dr Mahejibin Khan of CSIR-Central Food Technology Research Institute, Mysore talked on the scientific gathering on the threat to food safety and public health due to anti-microbial resistance.

There was a session on nuances of using data and technology tools to alleviate toxicity and promote human health. In this session Dr Subramanian from CSIR-Central Leather Research Institute (CSIR-CLRI), Chennai highlighted the advantages of machine learning strategies for toxicity prediction, and Dr Chakrabarti from CSIR-Indian Institute of Chemical Biology (CSIR-IICB), Kolkata spoke about big data and artificial intelligence (AI) based diagnostic and prognostic tools.

This was followed by a presentation on the Global Burden of Disease by Dr C Keshav Chandran, CSIR-IITR and the role of AI and data science in revolutionizing drug discovery by Anvita Gupta of AIGen Therapeutics.

Published in:

Indus Dictum



CSIR-IITR

5th December, 2019

जना जाराष्ट्राम । भग । भर्गा । राजारा जार्जा स्वाप्त राजारा ।

विषविज्ञान लखनक। भारतीय अनुसंधान संस्थान दक्षिण एशिया की लिए प्रौद्योगिकीय समाधान प्रदान करना एक प्रमुख विषविज्ञान प्रयोगशाला है। है। हाल ही में आयोजित संस्थान के आदशं वाक्य पर्यावरण एवं स्वास्थ्य की सुरक्षा तथा उद्योग की सेवा के साथ इसकी स्थापना वर्ष 1965 में हुई थी । अपने आदर्श वाक्य के अनुसार ही संस्थान ने मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण, औद्योगिक तथा पर्यावरणीय रसायनों के प्रभाव आकलन ओर वाय् एवं मृदा में प्रदूषकों पर्यावरणीय अनुवीक्षण के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सेवा प्रदान की है। संस्थान एनजीसीएमए, एफएसएआई आदि जैसे अनेक प्रमाणक एवं नियामक निकायों द्वारा मान्यता प्राप्त है, जो कि संस्थान के अत्याध्निक अनुसंधान कार्यों का प्रमाण आईआईटीआर खाद्य विषाक्तता हेतु एफएसएआई द्वारा अनुमोदित राष्ट्रीय संदर्भ प्रयोगशाला के रूप में भी कार्य करता है एवं सीएसआईआर मिशन मोड कायक्रम : खाद्य तथा उपभोक्ता स्प्रक्षा समाधान पर अग्रणी कार्य कर रहा है। इस मिशन मोड

कार्यक्रम का उद्देश्य खाद्य स्रक्षा के वार्षिक दिवस समारोह के एक भाग के रूप में, संस्थान 05-06 दिसंबर को आईटीसी-2019 के 5वें अंतर्राष्ट्रीय विषविज्ञान सम्मेलन का आयोजन कर रहा है, जिसमें विषविज्ञान के प्रमुख क्षेत्रों भविष्य हेतु खाद्य

सुरक्षा,विषविज्ञान एवं स्वास्थ्य में डाटा विज्ञान का आगम ,प्रदूषण का उपशमन एवं इसके उपचार,शिक्षा, उद्योग एवं नियामक निकायों के विभिन्न राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों ने इस दो दिन के सम्मेलन में अपनी उपस्थित हेत् पृष्टि की है, जिससे सभी प्रतिभागियों को वैज्ञानिक और बौद्धिक अनुभव प्राप्त होगा।

Published in:

Jan Sandesh Times



CSIR-NEERI

2nd December, 2019

CSIR-NEERI releases framework for monetary assessment of environmental impacts

Staff Reporter

A SPECIAL report on "Framework for Environmental Damage Cost Assessment with Examples" brought out by CSIR-National Environmental Engineering Research Institute (CSIR-NEERI) was released by Dr. Sukumar Devotta, Former Director, CSIR-NEERI; Dr. R.R. Sonde, Executive Vice President, Thermax Limited; Prof. Anjan Ray, Director CSIR-IIP; Dr. Rakesh Kumar, Director, CSIR-NEERI and Dr. Atya Kapley, Scientist and Head, Director's Research Cell, CSIR-NEERI during the fourth International Conference on Sustainable and Environmental Challenges held recently at CSIR-NEERI. The report highlights the methodologies by which environmetal damages can monetarily be estimated. This report can act as a baseline to olfor monetary assessment of environmental impacts and be useful for policy makers, industries, regulatory authorities, etc.

While releasing the report, Dr.



Dr Rakesh Kumar, Dr Atya Kapley, Dr Sukumar Devotta, Dr R R Sondec holding report.

Rakesh Kumar, Director, CSIR-NEERI said that it was urgently required to develop this framework for effective implementation of the regulations like 'polluter pays principle', 'extended producer responsibility', etc. This framework will now more facilitate the regulatory authorities and industries to derive the precise cost for environmental damages, he added.

Hemant Bherwani, Scientist, CSIR-NEERI, the lead author of the report, stated that this framework would be able to bridge the gap between national and interna-

tional standards, and will have more applicability in the country. The report contains the methdologies for evaluation of the damages and associated monetary loss due to release of pollutants in four major sectors namely air, water, climate and solid waste, said Er. Ankit Gupta, Senior Scientist, CSIR-NEERI, who is a co-author of the report. This report is a stepping stone and will continue to evolve over time adding more domains of environmental damages whilst addressing complex relationships between different environmental processes.

Published in:

The Hitvada



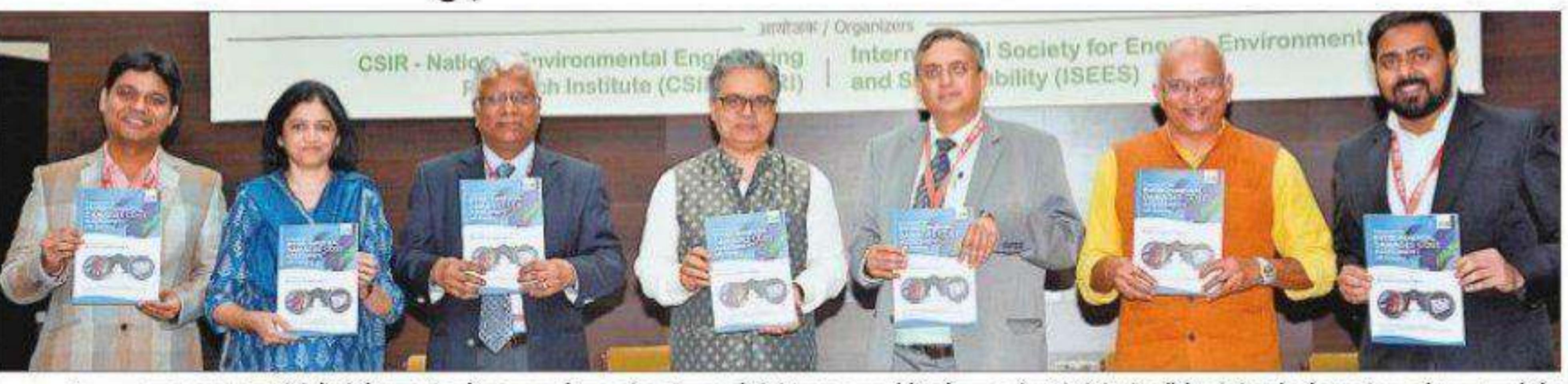
CSIR-NEERI

2nd December, 2019

प्रदूषण से आर्थिक हानि पर नीरी ने तैयार की रिपोर्ट, निदेशक डॉ. राकेश कुमार ने कहा-

रिपोर्ट तय करेगी प्रदूषण करने वालों की जिम्मेदारी

सिटी भारकर | नागपुर, लगातार बढ़ता प्रदूषण सेहत के साथ-साथ आर्थिक रूप से भी नुकसान पहुंचा रहा है। पर्यावरण के प्रति असंवेदशील औद्योगिक इकाइयों की जिम्मेदारी तय करने के लिए इस दिशा में विशेष निति और नियमन की आवश्यकता है। इसी को ध्यान में रखकर सीएसआईआर (नीरी) की ओर से फ्रेमवर्क फॉर एनवॉयरनमेंटल डैमेज कॉस्ट एसेसमेंट विद एग्जाम्पल रिपोर्ट तैयार की गई है। हाल ही इस रिपोर्ट का लोकार्पण नीरी के पूर्व निदेशक डॉ. सुकुमार दिवोदत्ता ने किया।



मूल्यांकन पर डाला

गया प्रकाश इस अवसर पर नीरी के निदेशक डॉ. राकेश कुमार ने कहा कि पॉल्यूटर-पे प्रिसिंपल व एक्सटेंडेड प्रोडयूसर रिस्पॉसिबिलिटीज जैसे अधिनियमों को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए इस रिपोर्ट की आवश्यकता थी। इससे नियामक, प्राधिकरणों और उद्योगों को पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति के संबंध में वास्तविक व्यय आंकने में मदद मिलेगी। रिपोर्ट तैयार करने वाले प्रमुख इंजीनियर हेमंत भेरवानी ने कहा कि इस फ्रेमवर्क से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मानकों के बीच के अंतर को पाटने में मदद मिलेगी। वैज्ञानिक अंकित गुप्ता ने कहा कि रिपोर्ट में पर्यावरणीय हानि के चारों क्षेत्र वायु, जल, जलवायु और ठोस अपशिष्ट में प्रदूषण को लेकर आर्थिक क्षति के मूल्यांकन के तौर-तरीकों पर भी प्रकाश डाला गया है। लोकार्पण कार्यक्रम में डॉ. आर. आर. सोंडे (कार्यकारी उपाध्यक्ष थर्मेक्स लिमिटेड), प्रो. अंजन रे (सीएसआईआर-आईआईपी देहरादून), डॉ. आत्या काप्ले उपस्थित थे।

Published in:

Dainik Bhaskar



Please Follow/Subscribe CSIR Social Media Handles

